Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

وَاَنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ ۛ وَاَحْسِنُوْا اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ○

(सूरतुल बक़रा आयत :196)

अनुवाद: और अल्लाह के मार्ग में खर्च करो और अपने हाथों से अपने आप को हलाक मत करो। और उपकार करो अल्लाह उपकार करने वालों को पसन्द करता है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 3

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 22

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

15 रमज़ान 1439 हिजरी कमरी 31 हिजरत 1397 हिजरी शमसी 31 मई 2018 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया कि कश्ती नूह में हमारी शिक्षा का जो भाग है वह ज़रूर हर अहमदी को पढ़ना चाहिए बल्कि पूरी कश्ती नूह ही पढ़ें।

स्मरण रहे कि केवल मुख से बैअत को स्वीकार करना अर्थहीन है जब तक हार्दिक तौर पर उसका पूर्ण अनुसरण न करे। अत: जो मनुष्य मेरी शिक्षा का पूरा-पूरा पालन करता है वह मेरे इस घर में प्रवेश कर जाता है जिसके विषय में ख़ुदा की वह्यी में यह वायदा है

اِنِّيْ اُحَافِظُ كُلَّ مَنْ فِي الدَّارِ

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

दूसरा निशान प्लेग का, जैसा कि ख़ुदा ने फ़रमाया-

وَ اِنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوْهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ اَوْ مُعَذِّبُوْهَا عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ (बनी इस्राईल 59)

अत: ख़ुदा ने देश में रेल भी जारी कर दी और प्लेग भी भेज दी ताकि धरती भी साक्षी हो और आकाश भी। अत: ख़ुदा से मत लड़ो कि परमेश्वर से लड़ना मूर्खता है । इस से पूर्व ख़ुदा ने जब आदम को ख़लीफ़ा बनाना चाहा तो फ़रिश्तों ने रोका, पर क्या ख़ुदा उनके कहने से रुक गया । अब ख़ुदा ने दूसरा आदम पैदा करने के समय कहा-

''अरदतो अनअस्तख़लिफ़ा फ़ख़लक़्तो आदम''

अर्थात मैंने इरादा किया कि ख़लीफ़ा बनाऊँ । अत: मैंने इस आदम को पैदा किया। अब बताओ कि क्या तुम ख़ुदा के इरादे में बाधा डाल सकते हो । तुम क्यों काल्पनिक बातों को प्रस्तुत करते हो और विश्वास-मार्ग का अनुसरण नहीं करते। परीक्षा में मत पड़ो। निसन्देह स्मरण रहे कि ख़ुदा की इच्छा में कोई बाधा नहीं डाल सकता। इस प्रकार के झगड़े संयम का मार्ग नहीं । हां यदि शंका है तो यह उपाय हो सकता है, जैसा कि मैंने ख़ुदा से इल्हाम(ईशवाणी) द्वारा संदेश पाकर मनुष्यों के एक समुदाय के लिए जो मेरे आदेशों का पालन करने वाले हैं प्लेग के प्रकोप से बचने के लिए जो शुभ संदेश पाया है और उसे प्रकाशित कर दिया है। ऐसा ही यदि आप लोगों के हृदय में अपनी क़ौम की भलाई है तो आप लोग भी अपने धर्मावलम्बियों के लिए भी अल्लाह से प्लेग से मुक्ति का शुभ-समाचार प्राप्त करें कि वे प्लेग से सुरक्षित रहेंगे, और इस समाचार को मेरी तरह विज्ञापन स्वरूप प्रकाशित कर दें ताकि लोग समझ सकें कि अल्लाह आपके साथ है। यह अवसर ईसाइयों के लिए भी अत्यन्त उपयुक्त है। वे हमेशा कहते हैं कि मुक्ति मसीह से है। अत: अब उनका भी कर्तव्य है कि इन संकट के दिनों में ईसाइयों को प्लेग से मुक्ति दिलाएँ। इन समस्त सम्प्रदायों में से जिसकी अधिक सुनी गई वहीं स्वीकार योग्य है। अब अल्लाह ने प्रत्येक को अवसर प्रदान किया है कि अकारण ही धरती पर विवाद न करें। अपनी स्वीकार्यता बढ़ चढ़ कर दिखाएँ ताकि प्लेग से भी बचें और उनकी सच्चाई भी खुल जाए, विशेषकर पादरी साहिबान जो इस लोक और परलोक में मरयम के बेटे मसीह को ही मुक्तिदाता मान चुके हैं। वे यदि हृदय से उसे इस लोक और परलोक का स्वामी समझते हैं तो अब ईसाइयों का अधिकार है कि इनके कफ़्फ़ारा से मुक्ति का नमूना देख लें। इस प्रकार आदरणीय सरकार को भी बहुत सुविधा हो सकती है कि ब्रिटिश इण्डिया के भिन्न-भिन्न समुदाय जो अपने-अपने धर्म की सत्यता पर भरोसा करते हैं, अपने समुदाय को छुड़ाने और प्लेग से मुक्ति दिलाने के लिए यह प्रबन्ध करें कि अपने उस ख़ुदा से जिस पर वे आस्था रखते हैं या अपने किसी अन्य पूज्य से जिसे उन्होंने ख़ुदा का स्थान दे रखा है, इन आपदाग्रस्त लोगों की सिफ़ारिश करें और उससे कोई ठोस वायदा लेकर विज्ञापनों के रूप में प्रकाशित करें जैसा कि हमने किया है । इसमें सर्वथा प्रजा की भलाई और अपने धर्म की सत्यता का प्रमाण एवं सरकार की सहायता है। सरकार इसके अतिरिक्त कुछ नहीं चाहती कि उसकी प्रजा प्लेग से सुरक्षित हो जाए चाहे किसी भी प्रकार हो। अन्तत: स्मरण रहे कि हम इस विज्ञापन में अपनी जमाअत को जो भारत और पंजाब के विभिन्न भागों में फैली हुई है टीका लगवाने से मना नहीं करते। जिन लोगों के बारे में सरकार का स्पष्ट आदेश हो उनको टीका अवश्य लगवाना चाहिए और सरकारी आदेश का पालन करना चाहिए। जिनको उनकी इच्छा पर छोड़ा गया है यदि वे मेरी शिक्षा जो उनको दी गई का पूर्ण रूपेण पालन नहीं कर रहे तो उनको भी टीका लगवाना उचित है ताकि वे ठोकर न खाएँ और अपनी ख़राब दशा के कारण ख़ुदा के वायदे के सम्बन्ध में लोगों को धोका न दें। यदि प्रश्न यह हो कि वह शिक्षा क्या है जिसका पूर्ण रूपेण अनुसरण प्लेग के प्रकोप से सुरक्षित रख सकता है, तो मैं संक्षेप में निम्न पंक्तियां लिख देता हूँ :-

शिक्षा

स्मरण रहे कि केवल मुख से बैअत को स्वीकार करना अर्थहीन है जब तक हार्दिक तौर पर उसका पूर्ण अनुसरण न करे। अत: जो मनुष्य मेरी शिक्षा का पूरा-पूरा पालन करता है वह मेरे इस घर में प्रवेश कर जाता है जिसके विषय में ख़ुदा की वही में यह वायदा है اِنِّيْ اُحَافِظُ كُلَّ مَنْ فِي الدَّارِ ی ''इन्नी उहाफ़िज़ो कुल्ला मन फ़िद्दार''अर्थात प्रत्येक जो तेरे घर की चारदीवारी के अन्दर है मैं उसे सुरक्षित रखूंगा। यहां यह नहीं समझना चाहिए कि मेरे घर के अन्दर वही लोग हैं जो मेरे इस ईंट गारे के घर में रहते हैं बल्कि वे भी जो मेरा पूर्ण अनुसरण करते हैं, मेरे आध्यात्मिक घर में दाख़िल हैं। अनुसरण करने हेतु यह बातें हैं:- कि वह विश्वास करे कि उनका एक सर्वशक्तिमान, जीवन प्रदान करने और समस्त संसार को पैदा करने वाला ख़ुदा है जो अपने गुणों में अनादि और अनन्त है और वह अपरिवर्तनीय

शेष पृष्ठ 9 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

जलसा सालाना ब्रिटेन 2017 ई के अवसर पर सय्यदना हज़रत अमीरूल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की व्यस्तता (भाग-7)

☆ इस्लाम अंतिम और आदर्श धर्म है और सभी अन्य धर्म अंततः इस्लाम में प्रवेश करेंगे और यही एक धर्म होगा।

☆ आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भविष्यवाणी फरमाई थी कि अन्तिम ज़माना में एक सुधारक और मुस्लेह आएगा और उस के ज़माना में तलवार के जिहाद का ख़त्मा होगा। हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सालम वही सुधारक हैं जो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार आए। आप अलैहिस्सालम ने घोषणा की कि अब तलवार का जिहाद नहीं है यह कलम के जिहाद का ज़माना है।

☆ स्पेन में इस्लाम सात सौ साल तक रहा। फिर ईसाइयत दोबार आ गई। अब हम दोबारा लोगों के दिलों को फिर से जीतेंगे और उन के दिलों में इस्लाम को प्रवेश करेंगे। इस्लाम किसी भी युद्ध के कारण नहीं फैलेगा, बल्कि इस्लाम अपनी मूल शिक्षा प्रेम के माध्यम से फैलेगा।

मुलाकात करने वाले मेहमानों को सय्यदना हुज़रत ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला की तरफ से इस्लाम का वास्तविक सन्देश।

जिस बात ने मुझे जमाअत के बारे में अधिक प्रभावित किया वह जमाअत अहमदिया का अमन की स्थापना के लिए जोश और इस की स्थापना के लिए कोशिशें। इमाम जमाअत अहमदिया का अन्तिम सम्बोधन जितना अहमदियों के लिए ज़रूरी थी उतना ही बाकी दुनिया के लिए भी ज़रूरी था।

(पत्रकार Carlos Jamie साहिब)

ख़लीफतुल मसीह का सन्देश न केवल मुसलमानों बल्कि सारी दुनिया के लिए है। सारी दुनिया से आए हुए लोगों के देख कर मैं बहुत हैरान हुआ विभिन्न क़ौमों और रंग तथा नस्ल को लोग मिले, जिन का रहन सहन अलग था लेकिन मुहब्बत और ईमान अमन के हिसार और अल्लाह तआला के नाम पर जमा थे। अल्लाह तआला करे के सारी दुनिया पहचान ले कि यह जमाअत मुहब्बत तथा सलामती वाली जमाअत है।

जलसा में सम्मिलित होने वाले सम्मानित सदस्यों के ईमान वर्धक विचार

दुनिया के विभिन्न देशों से जलसा में शामिल होने वाले प्रतिनिधियों की हज़रत अमीरूल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ से मुलाकातें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की इन दिनों में असामान्य व्यस्तता का संक्षिप्त उल्लेख

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

नाइजीरिया के वफ्द की हुज़ूर अनवर से मुलाकात

*इस के बाद नाइजीरिया से आने वाले मेहमान मूसा इब्राहिम साहिब Chief of Borgu Empire ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात का श्रेय प्राप्त किया। महोदय ने जलसा सालाना की व्यवस्था के संदर्भ में अपने विचार को व्यक्त करते हुए, अनुशासन और बलिदान की गुणवत्ता अपने चरम को छू रही है। यह केवल जमाअत अहमदिया है जो इस्लाम के सही और पूर्ण चेहरे को पेश कर रही है और "प्रेम सब के लिए नफरत किसी से नहीं" की वास्तविक अभिव्यक्ति को मैंने इस जलसा में देखा है। मुझे इस जलसा में आदर्श मेहमान नवाज़ी देखने को मिली। इस्लाम जिस एकता और तौहीद की शिक्षा देता है वह केवल जमाअत अहमदिया में देखने को मिलती है। अल्लाह तआला जमाअत अहमदिया के ख़लीफा और सभी मुस्लिम उम्मत को उनकी कृपा और दया की छाया में रखे। महोदय ने मुलाकात के अंत में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनाने का सौभाग्य प्राप्त किया। यह मुलाकात दो बजे तक जारी रही।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ मस्जिद फज़ल पधारे और नमाज़ ज़ुहर तथा असर अदा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदयागी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर पधारे।

व्यक्तिगत और पारिवारिक मुलाकात

कार्यक्रम के अनुसार आज शाम सवा पांच बजे विभिन्न देशों से आने वाले जमाअत के मित्रों और परिवार की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ से मुलाकात शुरू हुईं। आज, 43 परिवार के 215 सदस्यों, इस के अतिरिक्त 28 व्यक्तिगत लोगों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ मुलाकात थी। इस तरह, 243 लोगों को मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

मुलाकात करने वाले यह परिवार निम्नलिखित 25 देशों से आए थे: पाकिस्तान, अमेरिका, जर्मनी, कनाडा, सऊदी अरब, ऑस्ट्रेलिया, सेनेगल, नॉर्वे, दुबई, डेनमार्क, अबू धाबी, यू.के, भारत, शारजाह, मॉरीशस, स्वीडन, बहरीन, जापान, स्विटज़रलैंड, कतर, घाना, ओमान, तंजानिया, गाम्बिया, युगांडा।

इनमें से प्रत्येक ने अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर बनाने का सौभाग्य प्राप्त किया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों को कलम तुहफा में दिए और छोटी आयु के बच्चों को चाकलेट प्रदान कीं।

मुलाकातों का यह कार्यक्रम आधी रात तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया मस्जिद फज़ल में तशरीफ ला कर नमाज़ मग़रिब और इशा जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों के अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर पधारे।

3 अगस्त 2017 ई (दिन गुरुवार)

आज सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ विभिन्न दफतरी मामलों में व्यस्त रहे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने डाक देखी और विभिन्न मामलों पर हिदायतें दीं। दो बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद फज़ल में तशरीफ ला कर नमाज़ ज़ुहर तथा असर अदा की। नमाज़ों के अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान पर पधारे।

अमीरों और जमाअत के सदर, मुबल्लिग़ों, केन्द्रीय प्रतिनिधियों के साथ

शेष पृष्ठ 9 पर

ख़ुत्बः जुमअः

पिछले दिनों जमाअत के एक बुज़ुर्ग और आलिम आदरणीय उस्मान चीनी साहिब की वफात हो गई। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। अल्लाह तआला ने उन्हें चीन के एक दूरस्थ क्षेत्र से अपनी विशेष तकदीर से निकाल कर पाकिस्तान आने और अहमदियत स्वीकार करने का अवसर दिया। किस किस तरह अल्लाह तआला उनके साथ व्यवहार करता था और उन्हें अहमदियत स्वीकार करने और उन्हें धार्मिक ज्ञान प्राप्त करने और फिर जीवन वक्फ (समर्पित) करने की तरफ मार्ग दर्शन किया।

उनके हालात और उनकी जीवनी और सेवाओं और सीरत के बारे में इतनी अधिक सामग्री है कि एक किताब लिखी जा सकती है मेरे विचार में ख़ुद्दामुल अहमदिया पाकिस्तान यह काम बेहतर रूप से कर सकती है। बहरहाल इस समय में इस दरवेश सिफत व्यक्ति, जमाअत के बुज़ुर्ग वक्फे ज़िन्दगी, मुबल्लिग़ सिलसिला, आलिम बा अमल और वलीउल्लाह व्यक्ति का कुछ वर्णन करूंगा जो वाकफ़ीन ज़िन्दगी और मुबल्लिग़ों के लिए भी विशेष रूप से और आम तौर पर प्रत्येक अहमदी के लिए अनुकरण योग्य है,

---

आदरणीय मुहम्मद उस्मान चु चिंग शी का गुणों का वर्णन और नमाज़े जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 27 अप्रैल 2018 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ
اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔
غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

पिछले दिनों जमाअत के एक बुज़ुर्ग और आलिम आदरणीय उस्मान चीनी साहिब की वफात हो गई। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। अल्लाह तआला ने उन्हें चीन के एक दूरस्थ क्षेत्र से अपनी विशेष तकदीर से निकाल कर पाकिस्तान आने और अहमदियत स्वीकार करने का अवसर दिया। किस किस तरह अल्लाह तआला उनके साथ व्यवहार करता था और उन्हें अहमदियत स्वीकार करने और उन्हें धार्मिक ज्ञान प्राप्त करने और फिर जीवन वक्फ (समर्पित) करने की तरफ मार्ग दर्शन किया। उनकी अपने स्वयं के लिखे लेख हैं, उन्होंने अपनी यादें लिखी हैं और इस में काफी विस्तार से उस पर प्रकाश डाला है। यह विस्तार तो यहां वर्णन का समय नहीं है। उन्होंने विभिन्न लोगों को जो अपनी कुछ बातें बताएं लोगों ने जो उनके बारे में कुछ बातें लिखी हैं वे भी बहुत विस्तार से लिखी हुई हैं और उनका विवरण वर्णन करना भी या उन सब को वर्णन करना भी संभव नहीं। बहुत ईमान वर्धक बातें हैं। उनके हालात और उनकी जीवनी और सेवाओं और सीरत के बारे में इतनी अधिक सामग्री है कि एक किताब लिखी जा सकती है मेरे विचार में ख़ुद्दामुल अहमदिया पाकिस्तान यह काम बेहतर रूप से कर सकती है। बहरहाल इस समय में इस दरवेश सिफत व्यक्ति, जमाअत के बुज़ुर्ग वक्फे ज़िन्दगी, मुबल्लिग़ सिलसिला, आलिम बा अमल और वलीउल्लाह व्यक्ति का कुछ वर्णन करूंगा जो वाकफ़ीन ज़िन्दगी और मुबल्लिग़ों के लिए भी विशेष रूप से और आम तौर पर प्रत्येक अहमदी के लिए अनुकरण योग्य है, विभिन्न लोगों ने जो उन के सीरत के बार में लिखा है जैसा कि मैंने कहा है बाद में संक्षिप्त वर्णन करूंगा।

उस्मान चीनी के नाम से प्रसिद्ध थे, उनका पूरा नाम मुहम्मद उस्मान चु चिंग शी था। 13 अप्रैल 2018 ई को उन की वफात हुई। 13 दिसंबर 1 925 ई को यह चीन के अन्खोई प्रांत में एक मुस्लिम परिवार में पैदा हुए थे। हाई स्कूल के बाद 1946 में नान चुंग विश्वविद्यालय में एक साल का अग्रिम कोर्स किया फिर नान चुंग नेशनल सेंट्रल यूनिवर्सिटी विभाग राजनीतिशास्त्र में शिक्षा प्राप्त करना शुरू की। चूंकि राजनीति में कोई रूचि नहीं थी, इसलिए कानून या दर्शन के बारे में सोचा। पहले कहते हैं कि तुर्की जा कर अध्ययन करने का इरादा रखता था, फिर 1949 ई में यह पाकिस्तान आए। ख़ुद अनुसंधान कर के उन्होंने बैअत की। जामिया अहमदिया में पढ़ना शुरू किया। अप्रैल 1957 ई में जामिया अहमदिया से शहादतुल इजानब की परीक्षा पास की। यह मुबल्लिग़ों का short course था। 16 अगस्त 1959 ई को आपने वक्फ किया और आपकी नियुक्ति जनवरी 1960 ई में हुई थी। फिर मुबल्लिग़ कक्षा का पाठ्यक्रम पास करने के लिए, उन्होंने अप्रैल 1961 ई में जामिया अहमदिया में दाख़िला लिया और 1964 ई में शाहिद की डिग्री प्राप्त की। पाकिस्तान में वकालत तसनीफ तहरीक जदीद रबवा में तथा कराची और रबवा में उन्हें बतौर वाक्फे ज़िन्दगी और मुरब्बी के सेवा करने की तौफ़ीक़ मिली। 1966 ई में सिंगापुर और मलेशिया में उन्हें सेवा की तौफ़ीक़ मिली। वहाँ वे लगभग साढ़े तीन साल सिंगापुर में और लगभग चार महीने मलेशिया में रहे। 1970 ई में वापस पाकिस्तान आए और फिर विभिन्न स्थानों पर मुरब्बी सिलसिला रहे। उन्हें उमरा और हज बैतुल्लाह की भी सआदत नसीब हुई और हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबि की हिजरत के बाद जब यहाँ लंदन में विभिन्न कार्यालयों की स्थापना हुई, कार्यों में विस्तार पैदा हुई जमाअत के साहित्य का अनुवाद करने की ओर अधिक विस्तार पैदा हुआ तो चीनी डेस्क भी स्थापित किया गया था और उन्हें यहां बुलाया गया था और आपको चीनी किताबों के चीनी अनुवाद की तौफीक प्राप्त हुई, जिसमें कुरआन का चीनी अनुवाद विशेष रूप से उल्लेखनीय है। आप ने जमाअत की मान्यताओं और शिक्षाओं पर भी पुस्तकें लिखी हैं।

आपके परिवार में आपकी पत्नी एक बेटा और दो बेटियां हैं। जहां तक कुरआन के चीनी अनुवाद का सवाल है 1986 ई में उन्होंने चीनी कुरआन के अनुवाद काम हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबि की हिदायत पर शुरू किा और इसी साल जून में आप को पाकिस्तान से ब्रिटेन बुला लिया गया और चार साल की कड़ी मेहनत के बाद यह अनुवाद पूरा हुआ। चीनी साहिब ख़ुद लिखते हैं कि चीनी कुरआन का अनुवाद का काम काफी समय चाहता था हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबि की तरफ से हिदायत थी कि इस शत वार्षिकी जश्न के अवसर पर प्रकाशित होना चाहिए। कहते हैं कि मुझे बहुत चिंता थी कि काम समय पर पूरा हो जाए। उपयुक्त आदमियों की तलाश थी जो चीनी भाषा की गुणवत्ता और पुनः अवलोकलन में सुधार करने में मदद कर सकते हैं, और पाकिस्तान या ब्रिटेन में रह कर यह काम बहुत मुश्किल था। जैसे अगर चीनी भाषा में कोई पारंगत था तो इस्लामी ज्ञान से अनभिज्ञ था और अगर धर्म का ज्ञान था तो चीनी भाषा की गुणवत्ता नहीं थी और यह बड़ा कठिन काम था। बहरहाल कहते हैं जब अनुवाद पूरा हो गया तो हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे के निर्देश पर चीन और सिंगापुर जाकर चीनी भाषा के विशेषज्ञों से भी सलाह की और इस का सुधार किया और अल्लाह तआला की कृपा से चीनी भाषा में कुरआन का बड़ा मानक अनुवाद तैयार हुआ और ख़ुद यह बड़ी विनम्रता से लिखते हैं कि यह काम मेरे लिए संभव नहीं था यह केवल अल्लाह तआला की कृपा है जिस से संभव हुआ। यह कहते हैं कि चीनी भाषा में इससे पहले भी कई कुरआन के अनुवाद मौजूद थे और बाद में भी अनुवाद हुए जिनकी संख्या बहुत है लेकिन जमाअत अहमदिया ने जो अनुवाद किया है इस की अनूठी विशेषताएं हैं जो किसी और अनुवाद में नहीं

हैं और इसमें भी जमाअत के ज्ञान के कारण से यह एक महान कृति है। इसके प्रकाशन पर चीन और अन्य देशों की भाषा विज्ञों की तरफ से बहुत तबसरे किए गए जिस में इस को अनुवाद को सर्वोत्तम ठहराते हुए महान श्रद्धांजलि दी गई थी। जमाअत का अनुवाद काफी लोकप्रिय है और बड़ी मांग है और आम तौर पर कुछ लोग आपत्ति भी करते हैं कि जमाअत ने अपनी आस्थाओं को बीच में डाल दिया है या अपने अनुसार व्याख्या कर दी गई है लेकिन सामान्य रूप से अनुवाद की गुणवत्ता प्रत्येक ने बहुत अच्छी बताई है। चीन के एक प्रोफेसर लिन सान्ग हैं, उन्होंने एक पुस्तक "इस शताब्दी के चीनी भाषा में कुरआन के अनुवाद" पर लिखी है, जिसमें हमारे कुरआन के अनुवाद का भी उल्लेख है और इसमें लगभग पंद्रह पृष्ठों हैं जिन में जमाअत अहमदिया के चीनी कुरआन के अनुवाद पर इस की टिप्पणी हैं और प्रोफेसर साहिब बड़ी स्पष्टता के साथ हमारे कुरआन के अनुवाद के गुणों का ज़िक्र करते हैं जैसे कहते हैं कि आम उलेमा जब अनुवाद करते हैं कुछ शब्दों का अनुवाद नहीं करते बल्कि अनुवाद के स्थान पर वही अरबी शब्द लिख देते हैं या हाशिया में उसकी व्याख्या करते हैं लेकिन अंत तक ऐसा लगता है जैसे वह भाग उनके लिए अस्पष्ट है जबकि उस्मान साहिब के अनुवाद में यह सुविधा है कि वे ऐसे स्थानों का भी अनुवाद भी करते हैं और जिस आधार पर वे अनुवाद क्या होता है समर्थित संदर्भ हाशिया में दर्ज करते हैं। प्रोफेसर साहिब यह लिखते हैं कि कुरआन के अनुवाद के बारे में मैंने टिप्पणी लिखी थी उसके बाद कई बार उस्मान साहिब से मुलाकात भी हुई। मेरी धारणा यह है कि यह एक ग़ैर का पढ़े लिखे प्रोफेसर की धारणा है जो इस्लाम पर अपने आप को मानक समझता है कि यह अर्थात उस्मान चीनी साहिब एक सरल विनम्र निष्ठा पूर्वक और आदेशों पर गंभीरता से अमल करने वाले व्यक्ति हैं। कहते हैं रमज़ान में मैंने उन्हें दावत पर बुलाया था उस्मान साहिब रोज़ा रखते हैं। क़ुरआन शरीफ को शरीयत की उच्च किताब समझते हैं। फिर आगे लिखता है कि हालांकि उनके अनुवाद और व्याख्या के कुछ हिस्से हमारे चीनी सुन्नी समुदाय के लोगों के दृष्टिकोण से मेल नहीं रखते लेकिन क्या इस बात से इनकार किया जा सकता है कि यह व्यक्ति एकेश्वरवाद को मानने वाला है। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से प्यार करने वाला है और अल्लाह तआला के आदेश की पाबन्दी करने वाला है

चीनी साहिब ने अपनी निगरानी में जो चाईनीज़ साहित्य तैय्यार किया उनके अंग्रेज़ी शीर्षक ये हैं। My life and ancestary चाईनीज़ भाषा में लिखी है। Introduction to morality चाईनीज़ में लिखी। यह सात किताबें उनकी अपनी हैं वैसे पैंतीस के लगभग किताबें हैं जो उन्होंने अपनी निगरानी में अनुवाद कीं तथा करवाई हैं। An outline of Ahmadiyya Muslim jama'at यह जमाअत का परिचय है। Outline of Islam इस्लाम का परिचय है। Fundamental questions and answers about Islam बुनियादी सवाल हैं इस्लाम के विषय में। Islamic concept of Jihad and Ahmadiyya Muslim Jama'at यह भी उन्होंने चाईनज़ में किताब लिखी है Ahmadiyya Muslim comunity is contribution to the world यह लिखी और मानव जीवन में इस्लाम और धर्म की क्या ज़रूरत है। ये उपरोक्त वर्णित उनकी अकादमिक सेवाएं हैं। मैंने संक्षेप में वर्णन कर दिया है।

घरेलू जीवन के विषय में उनकी पत्नी लिखती हैं कि जब मेरे लिए उस्मान साहिब का रिश्ता पाकिस्तान से आया तो मेरे पिताजी ने उम्र के अंतर के कारण रिश्ता में सहमति प्रकट नहीं की। उनकी पत्नी भी चीनी हैं। और कहती हैं मेरी उम्र उस समय बीस साल थी। उस्मान साहिब पचास साल के करीब थी। कई महीने तक पिताजी ने मुझ से इस रिश्ता के बारे में बताया नहीं फिर अंत में जब उन्होंने बताया तो ख़त मेरे सामने रख दिया कि मैं ख़ुद निर्णय कर लूं। कहती हैं कि मैंने सपने में देखा था कि मैं बाहर किसी देश में एक बड़े क्षेत्र में बिल्कुल खाली हाथ खड़ी हूँ और अचानक सोचती हूँ कि मेरा क्या बनेगा। तब मैंने कुछ दूरी पर सफेद कपड़ों में एक व्यक्ति को देखा और एक आवाज़ सुनी कि तुम्हारी सभी ज़रूरतें इस व्यक्ति द्वारा पूरी की जाएंगी। कहती हैं इस पत्र को देखने के बाद मैंने उस्मान साहिब को सपने में देखा, जबकि वह सफेद कपड़े पहने मेरे पास खड़े थे और मैं लेटी हुई थी। बाद में जब मुझे उस्मान साहिब की तस्वीर दिखाई गई तो मुझे मालूम हुआ कि यही वह व्यक्ति है जिन्हें मैंने सपने में देखा था और इस तरह मैंने रिश्ता स्वीकार कर लिया। चार साल सगाई रही पासपोर्ट नहीं बन रहा था। वहां परिस्थितियां बड़ी ख़राब थी और राजनीतिक स्थिति और सांस्कृतिक तहरीक के कारण उन का आना बहुत मुश्किल था। वह कहती हैं कि उस्मान साहिब ने एक सपना देखा था कि जब माओ त्से-तुंग की मृत्यु होगी तो पत्नी आएगी और माओ त्से-तुंग साहिब चीन के उस समय चेयरमैन थे। उनको कोई बीमारी नहीं थे स्वास्थ्य भी अच्छा था और बड़े आराम से जीवन गुज़ार रहे थे बहरहाल उस पर उन्होंने कहा कि यह तो बड़ा लंबा समय लगता है पता नहीं कब आए चीनी साहिब ने फैसला किया कि माओ त्से-तुंग को पत्र लिखें। कहते हैं पत्र लिखने जा रहा था कि माओ त्से तुंग की मृत्यु की सूचना मिल गई और उसके बाद उनकी पत्नी लिखती हैं कि उस की मृत्यु के कुछ दिन बाद ही मुझे अपना पासपोर्ट मिल गया और कहती हैं अत: मैं अपने पिता के घर पासपोर्ट ले आई और जब मैं घर आई तो उस रात बहुत बारिश हुई और इससे पहले बहुत सूखा था इतनी बारिश हुई कि पृथ्वी में बड़े बड़े जो जल प्रवाह के कारण कटाव होते हैं वे पैदा हो गए। एक ग़ैर अहमदी पड़ोसी ने मुझे कहा कि तुम पहले आ जाती तो यह सूखा हम से दूर हो जाता। बहरहाल कहती हैं एक सप्ताह के बाद चीन से निकली और सामान मेरे पास कुछ भी नहीं था दो जोड़े थे जो उस्मान साहिब के छोटे भाई ने मुझे दिए थे और सोया सॉस की कुछ क्यूब्स थीं। 12 अगस्त 1978 ई को मैं कराची पहुंची। वहाँ चौधरी मुहम्मद मुख्तार साहिब ने निकाह पढ़ाया और खुद ही मेरे अभिभावक नियुक्त हुए तीसरे दिन हम ने चाईनीज़ एंबेसी में जाना था और ट्रेन द्वारा जब हम गए जहां पुरुषों और महिलाओं के लिए अलग अलग प्रबंध था और निर्णय यह हुआ था कि जब सारे लोग ट्रेन से उतर जाएंगे हम स्टेशन पर मिलेंगे लेकिन यह कहती हैं कि मैं तो नई थी जिस डिब्बा में बैठी थी उसके सारे लोग यात्री उतर गए मैं समझी यही अंतिम स्टेशन है और ट्रेन जब दोबारा चली तो तो मुझे एहसास हुआ उस समय ट्रेन को फिर से पकड़ना मुश्किल था बहुत भीड़ थी। ख़ैर मैं बहुत परेशान थी बहरहाल एक पुलिस अधिकारी ने जब मुझे फिरते हुए देखा तो उसने रेलवे पुलिस वालों को वहां बुला लिया और फिर मुझे चाईनीज़ एंबेसी भिजवा दिया। कहती हैं मैंने नकाब और कोट पहना हुआ था उस समय एंबेसी वालों को विश्वास नहीं आ रहा था कि मैं चाईनीज़ हूँ क्योंकि एक औरत बुर्का में कैसे हो सकती है बहरहाल उन्होंने एक चीनी पत्रिका मंगवाई और मुझे कहा पढ़ के सुनाओ और फिर टैक्सी का प्रबन्ध किया बहरहाल एक लंबी कहानी है और किसी न किसी तरह वह पहुँच गई। टैक्सी वाला रास्ते में पूछटाजा रहा था कि कहां जाना है तो उस ने उनको पहुंचा दिया और बल्कि ैक्सी वाला बहुत हैरान था कि मैंने कभी एक जवान औरत को घूमते हुए और फिर इस प्रकार से मिलते हुए गेखा नहीं। बहरहाल कहती हैं कि यह हमारी ज़िन्दगी की शुरुआत थी। उस्मान साहिब लिखती हैं कि बारे में लिखती हैं कि अच्छे पति थे, बल्कि मेरे आध्यात्मिक शिक्षक थे, जब मैं पाकिस्तान आई तो उन्होंने मुझे पहले नमाज़ पढ़ना सिखाया। मस्जिद में नमाढ़ पढ़ाने के बाद, घर आते और मुझे जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ाते। कई कई घंटों मुझे नमाज़ के अरबी शब्दों को याद कराते, उन्होंने मुझे प्रत्येक शब्द और पंक्ति सिखाई और इसे अभ्यास करने की सलाह दी और यदि अगर भूल जाओ, तो दुआओं की पुस्तक सामने रखें। उन्होंने मुझे छह महीने में कायदा पढ़ना सिखा दिया। उन्होंने मुझे कुरआन पढ़ना सिखाना शुरू किया तो साथ-साथ अनुवाद भी पढ़ाना शुरू किया, ताकि मेरी रुचि बनी रहे। बहुत धैर्य वाले थे। बहुत गहराई तक जाकर विषय को समझाते लंबे उदाहरण के साथ समझाते। रिश्तेदारों का बहुत अधिक सम्मान करने वाले थे। उन्होंने अपनी मां को चीन से पाकिस्तान बुलाकर उनकी भरपूर सेवा की। कहती हैं कई बार हमारे हालात ऐसे होते थे कि दिन मैं केवल एक बोतल दूध खरीद सकते थे और वह भी अपनी मां को दे देते थे। जहां भी सफर पर जाते अपनी मां को साथ रखते। चीनी साहिब ने मां की बहुत सेवा की। यह कहती हैं कि आपकी सारी उम्र अपने काम के साथ लगाव पर आधारित थी। जब आपका स्वास्थ्य अच्छा था, वे रात में देर तक दफतर में काम करते थे, बल्कि कई बार काम करते सुबह हो जाती थी। घर पर उनका सबसे महत्त्वपूर्ण काम बच्चों को अच्छी तरह से प्रशिक्षित करना था और बाकी दुनिया में कोई दिलचस्पी नहीं लेते थे, अपने भोजन और कपड़ों के बारे में बहुत ही सरल तथा सादा मिज़ाज थे।

फिर उन की बड़ी बेटा डाक्टर कुर्रतुल ऐन साहिबा लिखती हैं कि मेरे पिता के गुणों को कुछ शब्दों में वर्णन करना मेरे लिए बहुत कठिन है। आप बहुत शफीक दयालु बहुत मेहनती अनथक मेहनती हमेशा अच्छी उम्मीद रखने वाले विनम्र इंसान थे। प्रत्येक मामले में हम सारे भाई बहन और फिर अपने दामादों को भी बातचीत में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करते थे। स्कूल की पढ़ाई में रुचि लेते थे। टीचर की प्रतिक्रिया मालूम करते थे कि टीचर ने क्या कहा और कहते थे तुम लोगों के जीवन का उद्देश्य यह है , दुनिया में तुम्हें इसलिए अल्लाह तआला ने भेजा है कि तुम तब्लीग़ करो विशेष रूप से चाईनीज़ लोगों को और हमें नियमित समझाते थे कि आध्यात्मिकता नैतिकता और ज्ञान में तरक्की करते रहो और अक्सर कहते थे

कि तुम लोग के व्यक्तित्व और दृष्टिकोण को देख कर लोगों को यह इहसास होना चाहिए कि ईश्वर मौजूद है, क्योंकि जो बच्चे ईश्वर में विश्वास करते हैं वे उन बच्चों से बेहतर होते हैं जो उस पर विश्वास नहीं करते हैं। यह भी नसीहत करते कि तुम्हारे हर काम जो शुरू करो उसमें नियमितता होनी चाहिए। यह कभी नहीं हुआ कि आप ने बचपन में डांटा हो। हमेशा प्यार से समझाते और जहां कहीं कठोरता की तो नमाज़ के बारे में कि नमाज़ में नियिमतता क्यों नहीं रखी। और बल्कि आदत डालने के लिए हमें बचपन में पांचों समय नमाज़ पढ़ने के लिए ले जाते और हमें छुट्टियों में कोई न कोई किताब पढ़ने के लिए देते और इस का टेस्ट लेते थे। फिर कहती हैं कि उन्होंने किश्ती नूह की एक बहुत पुरानी कापी पढ़ने के लिए दी। और साथ साथ यह भी कही कि इस को पढ़ो इस की उर्दू इतनी कठिन नहीं है जितनी दूसरी किताबों की उर्दू कठिन है फिर कहने लगे यह किश्ती नूह वह पहली किताब है जो जामिया अहमदिया में उन्होंने ख़ुद पढ़ी थी। फिर पर्दा के बारे में भी उन को बहुत चिन्ता थी विश्वविद्यालय जाओगी तो पर्दा करना और अगर पर्दा उतारने की मजबूरी हो तो फिर मेकअप नहीं करना और केवल पढ़ाई के दौरान। हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे से उन्होंने पूछा था फिर इस की आज्ञा दी। विश्वविद्यालय में उनकी इस शर्त के साथ पढ़ने की अनुमति है कि तुम्हारा पर्दा हो और यदि कक्षा में पर्दा उतारना अनिवार्य है तो फिर मेकअप नहीं होना चाहिए। और इस के बाद भी फिर पर्दा हो।

इसी तरह, छोटी बेटी, मुंन्नज़ह वह भी कहती हैं कि हमेशा यह कहते थे कि तुम लोगों को चंद्रमा प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए, ताकि यदि चंद्रमा नहीं मिला, तो सितार तो मिल जांएगे। अर्थात ऊंचे उद्देश्य रखो। हमेशा पांचों समय की नमाज़ों के अतिरिक्त हमें तहज्जुद की नमाज़ पढ़ने की नसीहत करते। पानी के छींटे डाल कर हमें फज्र की नमाज़ में उठाते। हजरत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और ख़लीफाओं की किताबें पढ़ने की तरफ ध्यान दिलाते और कई घंटों बैठ कर बहुत ध्यान से हमारे सवालों के जवाब देते यह नहीं कि हमारी थोड़ी सी बात पर तंग आ जाएं। यह माता-पिता के लिए भी एक नमूना है। यह कहती हैं कि जो गुण तुम्हें अल्लाह तआला ने दिए हैं उन को प्रयोग करो और कभी उन्हें नष्ट न करो और कहती हैं जो कर्म भी करो अल्लाह तआला की इबादत की नियय्त से करो। आध्यात्मिक तरक्की का उदाहरण देते हुए कहते थे कि उस सीढ़ियों की तरह होती है जिस में कभी कभी ठहराव आ जाता है परन्तु फिर भी साथ ही साथ और अधिक उंचाई की तरफ कदम बढ़ता है।

यह लिखती हैं कि उन्होंने हमें सादगी और विनम्रता और दूसरों को ख़ुद पर प्राथमिकता देना सिखाया है। जब आप सदर जमाअत इस्लामाबाद थे जो सारे घरों में सेन्ट्रल हीटिंग लगाई जा रही थी। उस समय उन्होंने आश्वासन दिया कि हमारे घर में सब के अन्त में काम हो। उनके बेटे डाक्टर दाऊद साहिब कहते हैं कि उन्होंने मुझे बताया कि जामिया में शिक्षा के दौरान उन्हें अपने बड़े भाई और पिताजी की मृत्यु का टेलीग्राम आया तब वह जामिया की परीक्षाओं में व्यस्त थे उन्होंने सोचा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण ख़बर भी जामिया की परीक्षा की तरह है। अल्लाह तआला की परीक्षा है और यह सोच कर आप ने अपने समय पर परीक्षा दी और समय बर्बाद नहीं किया।

उन के यह बेटे ही लिखते हैं उनके कि चाईनीज़ लोगों में तब्लीग़ का उन्हें बहुत शौक था जिस फंगशन में भी जाते वहाँ लोगों को अहमदियत का परिचय कराते और साहित्य बांटते यहाँ तक कि जब आप व्हीलचेयर पर आते थे चल नहीं सकते थे, जब बीमार हो गए व्हीलचेयर के बॉक्स में भी बहुत किताबें लाने पर ज़ोर देते थे कि मैं लोगों में वितरित कर सकूं।

फिर यह कहते हैं कि जब मैं छोटा था तो कभी उनके कार्यालय में चला जाता पैन या पेंसिल लेने की कोशिश करता तो मुझे अपने कार्यालय में रखे हुए पैन को उपयोग करने नहीं देते थे और मेरी मां से कहते थे कि मेरे लिए अलग पैन खरीद कर इसे एक पैन दो और अगर कभी फोटो कॉपी करना है तो मुझे अपने घर से अपना पेपर लाने के लिए कहते और फिर मशीन पर फोटो कॉपी कर लेना। फिर, उन के बेटे उन के बारे में लिखते हैं अल्लाह तआला के गुणवाचक नामों को याद करने की नसीहत करते थे कि अल्लाह तआला के जितने गुणवाचक नाम हैं उन्हें याद करो। उन्होंने चीनी भाषा में एक कविता भी लिखी थी, जिसने अल्लाह के सौ विशिष्ट नामों की प्रशंसा की। यह नज़्म रोज़ाना रात को पढ़ते थे और खेल के रूप में हम भाई बहनों के साथ अल्लाह तआला के नाम को याद रखने के लिए प्रतिस्पर्धा करवाते थे, और फिर इनाम देते थे।

कोई दो तीन महीने पहले यह मुझसे अपने दामाद और परिवार के साथ मिलने आए तो उनके दामाद लिखते हैं कि मुझे उन्होंने तीन बातें लिख कर दिए कि मैं तो बोल नहीं सकूंगा। उन्होंने मेरे से जो पूछना था वह यह था कि मैं तो कमज़ोर हूं और मैं ख़ुद को खड़ा नहीं कर सकता, इसलिए मैं व्हीलचेयर पर बैठा हूं, इसके लिए खेद है। बड़ा सम्मान था ख़िलाफत का और यह भी दुआ करें कि मैं अंतिम सांस तक तब्लीग़ करता रहूं और इसकी मुझे अनुमति भी दें और फिर यह कि कार्यालय में जा नहीं सकता तो घर में अपना काम करने की अनुमति दें। काम की धुन थी, यह नहीं था कि मैं घर में बैठा हूं तो बैकार बैठा हूं। घर पर भी काम करते रहते। यह जब हज पर गए हैं तो उनके दामाद भी साथ थे। तो यह कहते हैं कि उस्मान साहिब ने अपनी दुआ की भावनाओं को चाईनीज़ नज़म में लिखा हुआ था और उनको बताया कि मैं इन को इसलिए नज़म में लिख रहा हूं कि ताकि भविष्य में भी उनसे लाभ उठा सकूं और हज के हमारे समूह में एक अवसर पर कुछ लोगों ने आदरणीय उस्मान चीनी साहिब से पूछा कि आप क्या लिख रहे हैं।? आप ने उन्हें संक्षेप में बताया कि मैं अपनी चाईनीज़ क़ौम के लिए दुआएं कर रहा हूँ कि अल्लाह तआला उन्हें वास्तविक इस्लाम की तरफ मार्गदर्शन दे। उन सावल करने वालों ने बहुत आश्चर्य को प्रकट किया कि एक बूढ़ा आदमी जो बिना सहारे कि चल नहीं सकता उस को अपनी क़ौम के मार्गदर्शन की चिन्ता है।

फिर चीनी साहिब अपने हालात में एक जगह लिखते हैं कि चीन में बौद्ध धर्म और कन्फ्यूशीवाद और ताओ वाद की कुछ शिक्षाएं आपस में मिश्रित हो गई हैं और कई चीनी एक समय में इन तीनों धर्मों की शिक्षाओं का पालन करते हैं लेकिन इस ज़माने में उन्होंने इन विभिन्न शिक्षाओं को जमा करके अपने लिए एक धर्म बनाया है और इस धर्म में मानव की नैतिक हालत की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है। उस्मान साहिब लिखते हैं कि जब तीन चीनी अखबारों में मेरे साक्षात्कार प्रकाशित हुए तो मलेशिया दास्ता सोसायटी ने जो नया धर्म दे इज़्म है उन की सोसायटी ने मुझ से इच्छा की कि मैं इस्लाम की नैतिक शिक्षाओं पर एक लेख लिख़ूं ताकि वह इस्लाम की नैतिक शिक्षाओं का दूसरे धर्मों की शिक्षाओं के साथ एक पत्रिका में प्रकाशित करें इसलिए मैंने इस सिलसिले में एक लेख लिखा और जिस पर उन्होंने वापस चीनी साहिब को जवाब दिया कि हमें आप ने इस्लाम बारे में एक भव्य लेख दिया है हम आपके बहुत आभारी हैं आप ने निष्पक्ष रंग में इस्लाम के तथ्य बयान किए हैं आप की चर्चा सूक्ष्म थी इससे मालूम होता है कि आप ने बहुत अच्छी तरह धर्म का अध्ययन प्राप्त किया है। चीनी लोगों को अभी तक इस्लाम से परिचय नहीं है कारण यह है कि चीन में इस्लाम का प्रचार नहीं किया गया था। अब आप सिंगापुर में इस्लाम के प्रकाशन के लिए आ गए हैं, तो यह अनिवार्य है कि इस्लाम चीनियों में फैल जाए और चीनी लोगों भी इस की बरकतों से लाभ प्राप्त करें।

आग़ा सैफुल्लाह साहिब इन के सहपाठी थे उस समय जामिया में पढ़ते थे। लिखते हैं कि उस्मान चीनी साहिब मेरे सहपाठी भी थी। आप भरपूर जवानी की उम्र में नेक अच्छे चरित्र और नेकियों के मालिक थे। बड़ी वेदना से नमाज़ अदा किया करते थे और बहुत रो कर दुआ मांगा करते थे। नफली रोज़ा रखा करते थे नफल अदा करने के आदी थे। तस्बीह तहमीद और ज़िक्रे इलाही में बहुत ध्यान था। अहमदियत की नेअमत मिलने पर बहुत अल्लाह तआला का शुक्र अदा किया करते थे और हमेशा बहुत श्रद्धा और वफादारी से भावनाओं को प्रकट करते थे। यह लिखते हैं कि यह सच्ची बात है कि पढ़ाई के ज़माना में भी है कई बार उदासी और फिक्र में उन के आँसू बहना शुरू कर देते थे। अपनी मां भाइयों से मिलने और उनकी खैरियत के बारे में वहाँ पर स्थापित शासन की वजह से कभी कभी दुख व्यक्त करते और बड़ी वेदना और गिड़िगड़ा कर अपने सच्चे ख़ालिक से दुआएं करते। कहते हैं यह नज़ारा अब बड़ी उम्र में भी मेरे लिए रश्क के योग्य हैं। आग़ा सैफुल्लाह साहिब लिखते हैं कि वास्तिवकता यह है कि इस ख़ुदा के बन्दा ने उस ज़माना में जो कुछ मांगा अल्लाह तआला ने उन की श्रद्धा और वफादारी को स्वीकार किया और अहमदियत की बरकत से सब कुछ दिया और बहुत नेअमतों से भी नवाज़ा बल्कि अल्लाह की मख़्लूक ने भी उन की दुआओं की कुबूलियत से लाभ उठाया। कहते हैं कि मुझे भी छात्र जीवन में हज़रत मौलवी ग़ुलाम रसूल साहिब राजेकी, हज़रत मौलवी अब्दुल लतीफ साहिब बहावलपूरी, साहिबज़ादा सय्यद अबुल हसन साहिब और दूसरे बुज़ुर्गों की सेवा में बैठने और दुआ का निवेदन करने और उन की दुआओं के प्रभाव को अल्लाह के फज़ल से देखने की तौफीक मिली है। यह लिखते हैं कि मैं पूरी सावधानी से और अपने देखने से यह गवाही दे सकता हूं कि इबादत में वेदना और दुआ की कुबूलियत के लिहाज़ से इन सम्मानीनय बुज़ुर्गों की छवि उस्मान चीनी साहिब की हस्ती में मौजूद थी। कहते हैं कि मैंने ख़ुद भी कई बार व्यक्तिगत मामलों में इन की कुबूलियते दुआ को देखा है। और फिर लिखते हैं कि

आप हमेशा मुझे और मेरे साथ के मिलने वालों को दुआएं करने की नसीहत करते थे और बहुत समझदार और मोमिन की फिरासत वाली समझ रखते थे। जमाअत के इंतज़ामी मामलों में बहुत ध्यान रखते थे। ख़ुद भी जमाअत के निज़ाम का बहुत ध्यान रखते थे और अपने दोस्तों और मिलने वालों को इस की हमेशा नसीहत करते थे। ख़िलाफत से पूर्ण रूप से अकीदत रखते थे और उन के उपकारों पर शुक्रिया अदा करते थे। जब भी कोई आप से दुआ का कहता था तो कहते थे कि समय की ख़लीफा की सेवा में दुआ का निवेदन किया।?

इस्लामाबाद के सदर जमाअत डाक्टर रिज़वान साहिब लिखते हैं कि नमाज़ से उन की मुहब्बत की यह अवस्था थी कि अन्तिम कुछ सालों में उन्हों अपने घर से मस्जिद तक जाने के लिए जो केवल कुछ मिन्ट की दूरी थी कई मिन्ट लग जाते थे और रास्ते में कई बार रुक कर सांस लेना पड़ता था परन्तु इस के बावजूद मैंने उन्हें कभी नमाज़ जमा करते हुए नहीं देखा। एक बार मग़रिब और इशा की नमाज़ में बहुत कम समय था तो मैंने उन्हें कहा कि आप मस्जिद में जाने के स्थान पर घर में इशा की नमाज़ का प्रबन्ध कर लिया करें या जमा कर लिया करें तो फरमाने लगे कि चलने से व्यायाम हो जाता है और घर से मस्जिद तक की दूरी यह करने का सवाब भी मिल जाता है इसलिए मैं जाता भी हूं और आता भी हूं।

रशीद बशीरुद्दीन साहिब अबू ज़हबी में हैं। वह कहते हैं कि उनकी दुआओं से ग़ैर अहमदी और अहमदी सब फ़ैज़ पाते थे जब यह कराची में ड्रग रोड निवास के दौरान मुरब्बी थे ग़ैर अहमदी पुरुष और महिलाएं चीनी साहिब से अपने व्यक्तिगत और अन्य मामलों में सलाह लेते और यह गवाही देते कि कि उनकी सलाह पर अनुकरण करने से और चीनी मौलवी से दुआ करवाने के बाद उन के बड़े बड़े मस्ले हल हो जाते हैं। तो सारांक्ष यह कि ड्रग रोड कराची का मशहूर चीनी मौलवी सभी लोगों के लिए लाभ दायक वुजूद रहा और लोगों को असंख्य मुहब्बतें बांटता रहा। इन के इंग्लैंड जाने के लंबे समय तक गैर-अहमदियों में उन का ज़िक्र और याद स्थापित रही।

यह कहते हैं मैंने यह भी देखा है चीनी साहिब माँ की बड़ी सेवा करते थे। कई बार माँ क्रोध से डांटती और यह लपक कर उन्हें प्यार करते उनकी ज़रूरतों का ख्याल रखते और इतने ध्यान से करते कि इस बात की कोई चिन्ता नहीं होती थी कि आसपास कोई है या नहीं कोई देख रहा है और उन का यह प्यार ग़ैर मामूली था।

जमाअत कमूक किर्गिस्तान के मजानो मुहम्मद साहिब लिखते हैं कि उस्मान चू साहिब से मेरी मुलाकात 1994 ई में एक यात्रा के दौरान हुई। शुरुआत मैं मुझे यह अनुमान नहीं हुआ कि वह मुसलमान हैं या जमाअत अहमदिया के विद्वान हैं लेकिन जब जहाज़ उड़ान भरने लगा तो उन्होंने बिस्मिल्लाह पढ़ा तब मुझे पता चला कि वह मुसलमान हैं। कुछ देर के बाद मैंने उन्हें सलाम किया हमारा परिचय हुआ और हमने विभिन्न मुद्दों के बारे में बात करना शुरू कर दी। उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या आप ने जमाअत अहमदिया मुस्लिम के बारे में जानते हैं। मैंने कहा, "मुझे नहीं पता," इस के बाद उन्होंने मुझ से पूछा। क्या आप कुरआन मजीद का चीनी भाषा में अनुवाद पढ़ते हैं। मैंने जवाब दिया कि जी मैं पढ़ता हूं। इस पर कहने लगे कि चीनी भाषा में कुरआन मजीद के कितने अनुवादों का आप को पता है? मैंने कहा, इस समय जितने कुरआन के अनुवाद हैं मैंने उन का अध्ययन किया है और कर रहा हूं । तो उस्मान साहिब ने कहा कि जिन अनुवादकों ने कुरआन के चीना भाषा में अनुवाद किए हैं क्या आप उन को जानते हैं? मैंने कहा मैं सब को जानता हूं। तो उस्मान साहिब ने कहा कि इन अनुवादकों में से एक मैं एक अनुवादक का नाम उस्मान चू है। क्या आप उन को जानते हैं। मैंने कहा कि जी मैं उन्हें नहीं जानता न मैंने उन का कुरआन का अनुवाद पढ़ा है और न मैं उन से मुलाकात हुई है। उन्होंने मुझ से पूछा कि आप उस्मान चू साहिब को कैसे जानते हैं? मैंने कहा कि बस मुझे यह ज्ञान हैं कि वह आलिम हैं। कुरआन का चीनी भाषा में अनुवाद कर चुके हैं मगर मैंने उन्हें कभी देखा नहीं। इस पर उन्होंने बताया कि मैं ही उस्मान चू हूं। मुझे विश्वास नहीं आ रहा था कि मैं उस्मान चू साहिब से मुलाकात कर रहा हूं उन्होंने मुझे अपना सम्पर्क का नम्बर दिया फिर अस्थायी पता भी दिया जहां ठहरे हुए थे। एक दो दिन के बाद उस्मान चीनी साहिब का फोन आया कि मैं आप के घर आ कर आप से मिलना चाहता हूं तो मैं सोच भी नहीं सकता था कि इतना बड़ा आलिम मेरे घर मिलने आने वाला है। मैंने इन का अपने घर में स्वागत किया। उन के साथ दो पाकिस्तानी दोस्त भी थे। हम दस मिन्ट तक विभिन्न विषयों पर बातचीत करते रहे इस के बाद उस्मान चू साहिब ने मुझे एक होटल में खाने की दावत दी। मैंने उनसे कहा कि आप अतिथि हैं और मुझे आपको आमंत्रित करना चाहिए, लेकिन उन्होंने कहा कि आप एक तो छात्र हैं और मैं आपके से बड़ा हूं और मैं आपके माता पिता के स्थान पर हूं , इसलिए मुझे आपकी मदद करनी चाहिए। उसके बाद हमने रेस्तरां में खाना खाया विभिन्न बातों के बारे में बात की और एक दिन की तरह बात की मैं उन्हें मिलने गया। सेंट्रल बैंक की इमारत थी। हम ने उन के निवास में बैठ कर बात की। उस्मान चू साहिब ने मुझ से वफाते मसीह, ख़त्मे नबुव्वत, याजूज माजूज, इमाम महदी और कुरआन तथा हदीस के बारे में सवाल किए। मैंने उन्हें वही जवाब दिए जो प्राय: मुसलमान दिया करते हैं, उस्मान चू साहिब मुस्कराने लगे और फिर मुझे इन सवालों के सही जवाब दिए मुझे शब्द ही नहीं मिल रहे थे कि मैं क्या जवाब दूं मुझ पर इन जवाबों का गहरा प्रभाव हुआ। इस प्रकार उन्होंने मुझे कुरआन मजीद का अनुवाद और कुछ पुस्तकें भी उपहार में दीं। और मुझे कहा कि इन्हें पढ़ो और मुझे ज़रूर लिखना कि इन किताबों को पढ़ कर कैसा लगा। कहते हैं कि बहरहाल मैंने इन किताबों को पढ़ा और मेरी सारी सोच बदल गई। उस समय मुझे बैअत का ज्ञान नहीं था बाद में मैंने बैअत कर ली और यह लिखते हैं कि मैंने हमेशा इस बात को सम्मान समझा कि मुझे हज़रत इमाम महदी के ज़हूर की ख़बर और सच्ची जमाअत के बारे में पता चला।

दुआओं की स्वीकृति की लोगों ने घटनाएं लिखी हैं। शाद साहिब लिखते हैं कि एक बार रबवा से कराची ट्रेन पर सफर कर रहे थे। साठ बच्चे साथ थे। रब्वा में अत्फाल का कोई फंगशन था। रास्ते में हम ने जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ी तो ग़ैर अहमिदयों को पता लग गया कि यह अहमदी हैं तो इस पर मौलवी ने डिब्बे में तक़रीर शुरू कर दी कि इन के विरुद्ध कार्य करो। हम बड़ा परेशान थे। उस्मान चीनी साहिब भी साथ थे। उस समय विभिन्न लोगों की सुरक्षा के लिए विभिन्न ड्यूटियां लगाई गईं। उस्मान चीनी साहिब ने कहा कि मेरी भी लगाओ इस पर कहते हैं मैंने कहा कि आप का काम यह है कि आप बर्थ पर बैठ जाएं और दुआ करें। मौलवियों को प्रोग्राम था कि मुलतान पहुंच कर इन के विरुद्ध कार्य करेंगे और मारेंगे। मुलतान गुज़र गया और ख़ामोशी छायी रही जाकर देखा तो मौलवी सोया हुआ था मौलवी साहिब ने तो मुलतान में उतरना था परन्तु इस तरह सोया कि मुलतान भी गुज़र गया उस की आंख नहीं खुली और कहीं अगले स्टेशन पर जाकर उतरा और इस तरह कहते हैं कि हमारी जान बची।

इसी तरह अदनान ज़फर साहिब कहते हैं कि मेरा होम कार्यालय में काम नहीं हो रहा था। पासपोर्ट मांगाता तो कहते कि हमारे रिकार्ड में आपका यू.के का रिकॉर्ड ही नहीं है। मैं नौकरी से छुट्टी लेकर तीन से चार महीने तक जाता रहा। अंत में निराश हो गया। एक दिन इस्लामाबाद में चीनी साहिब से मुलाकात हुई। नमाज़ पढ़ कर घर जा रहे थे मैं अपनी पासपोर्ट वाली समस्या वर्णन की। उन्होंने वहीं खड़े होकर दुआ की। दुआ करते हैं और इतनी वेदना थी और चीखने वाली दुआएं थीं कि कहते हैं कि मैं डर गया था कि मेरे लिए इतनी दुआएं कर रहे हैं मैंने ख़वामख़ाह इन को परेशान किया कुछ और लोग भी दुआ में शामिल हो गए। अगले दिन कहते हैं मेरे वकील ने जब फोन किया गृह मंत्रालय तो वहाँ से कोई उठा नहीं रहा था। बहुत देर तक लंबी घंटी बजती रही वहाँ जो निर्देशक था। वह वहाँ से गुज़रा। उसने फोन उठा लिया उन्होंने उन्हें बताया कि इस तरह समस्या है। निर्देशक ने कहा कि मैं सुबह कार्यालय में मुलाकात करूं। कहते हैं मैं सुबह कार्यालय में गया। उन का नाम श्री रिचर्ड था तो reception में गया reception में मैंने कहा मैंने उनसे मिलना है तो reception वालों ने कहा कि वह बड़ा अधिकारी है वह तुम्हें कहाँ मिलेगा आप हमें बताएं कि आप का क्या काम है उन्होंने कहा नहीं उन्होंने ख़ुद बुलाया है कोई भी अधिकारी रिपोर्ट करने के लिए तैयार नहीं था। अंत एक आदमी तैयार हुआ उसने जाकर बताया तो श्री रिचर्ड ख़ुद अपने कार्यालय से उठकर आए उन्हें अपने साथ ले गए कमरे में अपने कंप्यूटर पर पूरा रिकॉर्ड खोजा फिर अपने सचिव को बुलाया और पत्र दे दिया कि उन्हें पासपोर्ट जारी कर दें और फिर वापस छोड़ने के

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

लिए बाहर तक आ गया और सभी कर्मचारी देख रहे थे कि इतना बड़ा अधिकारी, जो एक बड़ा आदमी रहा है, वह विदेशी को छोड़ने के लिए बाहर निकला और दरवाज़ा खोल कर छोड़ने गया है। तो उसे मैं क्या बताता। कहते हैं इस समय मेरी जो हालत थी कि उस्मान चू साहिब की वेदना भरी दुआएं थीं जिसने चार महीने से फंसा हुआ काम केवल एक दिन में कर दिया और न केवल एक दिन में कर दिया बल्कि बड़े अधिकारी के हाथ से ख़ुद करवाया।

ऐसी कई घटनाएं हैं जैसा कि मैंने कहा था कि वर्णन नहीं की जा सकतीं इतनी अधिक हैं। कुछ एक जो उनके करीब हैं उन के बार में वर्णन कर देता हूं।

सैयद हुसैन अहमद साहिब मुरब्बी लिखते हैं कि हमारी साप्ताहिक बैठक होती थी, हमारे मुरब्बियों को पास कोई सवारी तो थीं नहीं। बसों में बैठ कर चले जाते थे। रात देर तक बैठक होती थी। जब इस के बाद जाने का होता थी तो हम प्रतीक्षा करते थे कि किसी न किसी आमला के मेम्बर के साथ चले जाऐं लेकिन उस्मान चीनी साहिब ने कभी इसके लिए इंतजार नहीं किया। वह पैदल ही चल पड़ते या रास्ता में कोई बस मिल जाती या कोई न कोई सवारी उन को ले जाती और मिशन हाऊस में जिस स्थान पर रहते थे वहां इतना स्थान था कि एक बार जब उन्होंने दावत की तो हम ने पूछा आप रहते कहां हैं।? उन्होंने कहा कि यही कमरा है जो औरतों का हाल है। जब औरतें नमाज़ पढ़ने के लिए आती हैं तो मैं अपना सामान समेट लेता हूं। और इस के बाद यही हमारे सोने का स्थान है खाने का स्थान है सब कुछ है। बहुत विनम्रता और विनय से छोटे से स्थान पर रहते थे।

रशीद अरशद साहिब हैं जो चीनी डेस्क में काम करते हैं। उन्होंने उन के साथ बहुत लम्बा समय काम किया है। यह कहते हैं कि 33 वर्ष साथ काम करने का अवसर मिला। उन के बारे में जो विशेषताएं हैं उन को लिखते हैं कि जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने के पाबन्द थे और इबादत में आन्नद हमारे लिए नमूना था। बारिश तूफान हो बर्फबारी हो लगातार जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने के लिए मस्जिद में आते थे और कहते हैं कि हम ने आप को इस अवस्था में भी देखा है कि बुढ़ापे के कारण कमज़ोर हो चुके थे। और इस्लामाबाद मस्जिद से घर आने में,(पहले भी इस का वर्णन हो चुका है।) जो कुछ मिन्ट की दूरी है सांस ले ले कर तय करते थे परन्तु मस्जिद ज़रूर आते थे। तहज्जुद की नमाज़ को नियम पूर्वक पढ़ा करते थे। कहते हैं कि एक बार हम लम्बा सफर कर के चीन के इलाका में गए और वहां भी स्थानीय अहमदी लोगों से देर तक बातचीत होती रही। मेरा विचार था कि तहज्जुद के लिए उठना कठिन होगा परन्तु सुबह देखते हैं कि चीनी साहिब तहज्जुद अदा कर रहे हैं यद्यपि छोटी अदा कि परन्तु छोड़ी नहीं। तो चीनी साहिब ने ख़ुद भी लिखा कि जब चीन से रब्वा आए तो दो देखा के रब्वा के बुज़ुर्ग किस वेदना से नमाज़ अदा करते हैं, रोज़े रखते हैं, इतेकाफ करते हैं, दुआएं करते हैं। अल्लाह तआला उन की दुआंए सुनता भी है इस बात का आप पर विशेष प्रभाव हुआ और आप ने इरादा कर लिया कि मैं भी इन बुज़र्गों के नक्शे कदम पर चलूंगा। उस समय आप को समय के ख़लीफा हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ि अल्लाह तआला का मार्ग दर्शन प्राप्त था। हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब और हज़रत मिर्ज़ा शरीफ अहमद साहिब जैसे वुजूदों की संगत प्राप्त थी। मौलाना ग़ुलाम रसूल राजेकी साहिब हज़रत हाफिज़ मुख़तार अहमद साहिब शाहजहांपुरी, हज़रत मुहम्मद इब्राहीम साहिब बकापूरी, सय्यद वली उल्लाह शाह साहिब जैसे लोगों की संगत से लाभ प्राप्त किया। इन बुज़ुर्गों की संगत ने आप के व्यक्तित्व को और अधिक उभारा और अल्लाह तआला से आप का सम्बन्ध पैदा हुआ।

कहते हैं कि तब्लीग़ में आप को बहुत जोश था प्राय: कम बोलने वाले और ख़ामोश तबीयत के मालिक थे परन्तु हम ने देखा है कि जब तब्लीग़ शुरू होती थी तो आप में ग़ैर मामूली शक्ति और जोश पैदा हो जाता था और घंटों बातचीत करते थे कई बार फोन पर ही बातचीत होती तो समय का इहसास समाप्त हो जाता था। और घन्टा घन्टा बात होती थी। मेहमान नवाज़ी आप को विरसा में मिली थी। कहा करते थे कि हमारे पिता बहुत अधिक मेहमान नवाज़ थे क्योंकि गांव में कोई होटल नहीं था और इन के पिता कहा करते थे हमारा घर ही होटल था। मेहमान नवाज़ी में चीनी साहिब की पत्नी भी इन का साथ देती थीं।

इसी प्रकार जितना भी थके हों प्रत्येक की भावनाओं का ध्यान देने वाले थे। एक बार देर रात तक मीटिंग होती रही और जब कार में बैठने लगे तो किसी ने कहा कि हमारा घर निकट है वहां चलें तो रशीद साहिब कहते हैं कि हमारा विचार था कि मना कर देंगे परन्तु आप चल पड़े और वहां जाकर उस आदमी ने फिर खाने का प्रबन्ध भी कर दिया। बहुत देर तक आप वहां रहे रात एक बजे के लगभग घर पहुंचे परन्तु यह न था कि किसी को इन्कार कर दें या यह कहें कि जल्दी करो मैंने घर जाना है।

इसी तरह नसीर अहमद बद्र साहिब मुरब्बी सिलिसला है यह भी लिखते हैं कि चीनी भाषा सीखने का जब मुझे इरशाद हुआ तो उसके बाद उनसे संपर्क हुआ वहाँ चीन के कई क्षेत्रों में जाकर दावत इलल्लाह की तौफ़ीक़ मिलती रही और इस अवसर पर उस्मान चीनी साहिब के लाभदायक मश्वरों और सलाह से फायदा हुआ। ख़तों के माध्यम से मार्गदर्शन करते थे। कहते हैं कि हज़ारों चीनियों को मौखिक और पुस्तकों, फ़ोल्डर के रूप में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का संदेश पहुंचाने का मौका मिलता रहा। कहते हैं लगभग हर जगह उस्मान चीनी साहिब का उल्लेख बहुत ऐसे अच्छे शब्दों में होता रहा जिन्हें चीन में इस्लाम का एक महान विद्वान माना जाता है। यह कहते हैं कि आप ने अपने पीछे जो चीनी भाषा का यादगार लिट्रेचर छोड़ा है वह कभी आप को मरने नहीं देगा। उन की कलम से निकली हुई चीनी भाषा की कई किताबों का समुन्द्र है जो उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के रूहानी ख़जायन से प्राप्त किया और अनुवाद करके लोगों को पहुंचाया। उन की सार गर्भित चीनी भाषा भी अपने अन्दर एक विशेष आकर्षण की भावना पैदा कर देती थी। कहते हैं कि इस बात का अंदाज़ा मुझे चीन के एक मदरसा में जा कर हुआ जहां पहली बार जाने पर तो उन्होंने कोई विशेष प्रतिक्रिया नहीं दिखाई। मदरसा में गया मुसलमानों का इलाका था परन्तु जब मैं कुछ समय बाद दोबारा वहां गया तो चीनी मुसलमान और इमाम साहिब बहुत प्यार करने वाले और बहुत चाव से मिले। इस पर एक दोस्त से मैंने पूछा कि क्या कारण है कि जब मैं पहली बार आप के पास आया था तो आप में इतनी चाहत न थी जितनी अब प्रकट हो रही है। इस पर एक दोस्त ने बताया कि जो चीना भाषा कि किताबें आप मौलवी साहिब को दे गए थे उनमें से विशेष तौर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की चयन की गई लेखनी का चीनी अनुवाद ख़ुत्बा में पढ़ कर सुनाते हैं तो हमारे अंदर एक वज्द जैसी स्थिति पैदा हो जाती हैं हमने इस से पूर्व अपने पूरे जीवन से इस तरह के एक अद्भुत प्रकार के लेखन को नहीं सुना है, इसलिए हम चाहते हैं कि आप हमें और इस प्रकार की किताबें लाकर दें।

फिर वह कहते हैं कि चीनी साहिब के मूल गांव में जाने का अवसर मिला। इन के रिश्तेदारों से मुलाकात हुई। सारे के सारे उस्मान चू साहिब का निहायत अदब और प्रेम से उल्लेख करते। हर कोई आता और उस्मान चू साहिब से अपना रिश्ता बताकर बड़ी ख़ुशी व्यक्त करता और जितने दिन वहां रहा सब ने बड़ा ख्याल रखा। बड़ा आतिथ्य किया। बड़ी आओ भगत की। सिर्फ इसलिए कि मैं उसमान चीनी साहिब को जानता हूं और मैं जमाअत अहमदिया का सदस्य हूं। कहते हैं उस्मान चीनी साहिब का चीनी भाषा में किया हुआ कुरआन का अनुवाद बहुत सरल और आसान शब्दों में हर किसी को समझ आने वाला अनुवाद है जिसमें चीनी भाषा की स्पष्टता और वाग्मिता की गुणवत्ता भी झलकती दिखाई देती है इसलिए बावजूद इसके कि कुरआन के दूसरे अनुवाद भी चीनी भाषा में मौजूद हैं लेकिन उस्मान चू साहिब का अनुवाद पूरे चीन में लोकप्रिय और प्रमाणपत्र की स्थिति रखता है इसका अंदाज़ा कई चीनी विद्वानों से मिलकर हुआ जो जमाअत के विश्वासों से मतभेद होने के बावजूद इस अनुवाद को बहुत सम्मान के दृश्य के साथ देखते हैं और कुरआन करीम को समझने के लिए बहुत चाहत रखते हैं। कहते हैं क्षेत्र के दैरा के दौरान, जब एक वरिष्ठ इमाम ने यह अनुवाद मेरे पास देखा, तो उसकी आंखें चमक गईं। उनके पास चीनी अनुवाद न था और इसे देखते ही ख़ुशी व्यक्त की और बार-बार कहा कि मैं लंबे समय से तलाश कर रहा हूं, क्या आप मुझे यह कुरआन दे सकते हैं? हम ने उन्हें कहा कि इस समय तो हमारे पास एक ही नुस्ख़ा है अपना पता भिजवा दें हम आपको उस्मान चीनी साहिब से मंगवा देते हैं तो कुछ देर सोचकर कहने लगे कि आप यह कुरआन थोड़ी देर के लिए मुझे उधार दे दें मैं उसकी फोटो कॉपी करूंगा। लगभग 1450 पृष्ठों पर आधारित इस अनुवाद का फोटो कापी करने पर इन का

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

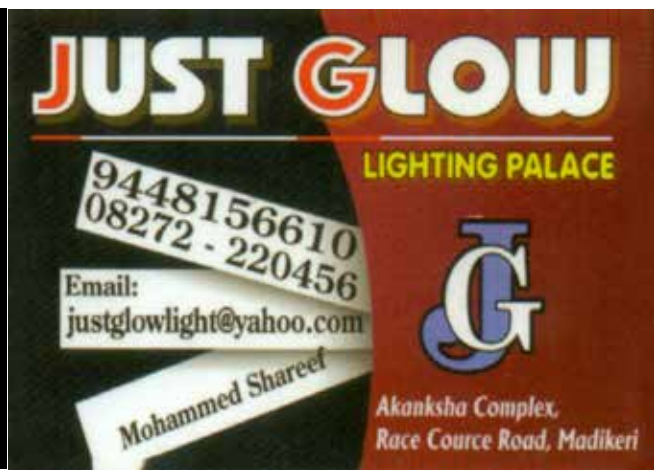

शौक देख कर हम ने उन को वह कुरआन करीम दे दिया। और वह इतने ख़ुश हुए और बार-बार शुक्रिया अदा करते थे जैसे उन को कोई बहुत बड़ा ख़ज़ाना मिल गया है ख़ुशी का इज़हार उन से बर्दाशत नहीं हो रहा था।

इसी तरह इन के सम्पर्क बहुत अधिक सम्पर्क थे अभी भी इन के सम्पर्क थे मुबल्लिग़ीन जो वहां रहे हैं उन्होंने लिखा है कि जहां भी हम चीन में जाते थे प्रत्येक स्थान पर चीनी साहिब का वर्णन था। ज़फ़रुल्लाह साहिब वहां मुरब्बी सिलिसला रहे हैं। आज कल पाकिस्तान में हैं। वह कहते हैं कि 2004 ई में चीनी साहिब जब पाकिस्तान में पधारे तो इस्लामाबाद से रब्वा के सफर के दौरान मुझे कल्लर कहार का वह स्थान ले जाकर दिखाया जहां आप जामिया में शिक्षा के दौरान आकर चिल्ला किया करते थे । आप ने अपनी दुआ की स्वीकार्यता की एक घटना का भी उल्लेख किया कि कैसे एक घर में गया जहां शादी के 10 साल बाद कोई बच्चा नहीं हुआ था। चिल्ला के दौरान चीनी साहिब से बच्चे के लिए दुआ का अनुरोध किया। चीनी साहिब ने दुआ की और सपने में देखा कि उनके आंगन में चारपाई पर चौधरी ज़फ़रुल्लाह ख़ान सोए हुए हैं आप ने यह सपना उन्हें सुनाया और कहा कि अल्लाह तआला ने सुसमाचार सुनाया है कि अल्लाह तआला आप को बेटा प्रदान करेगा। अत: कुछ समय के बाद, अल्लाह तआला ने उन्हें पुत्र दिया। जब यह कल्लर कहार में चिल्ला किया करते थे तो मुझे याद है हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी के ज़माना में हम छोटे थे। मैं भी एक बार उस स्थान पर गया था तो एक छोटे से कमरे में नीचे बैठे हुए थे और कुरआन करीम हाथ में था दुआएं कर रहे थे। फिर हम लोगों ने बच्चों ने भी और बड़ों ने भी उन को दुआओं के लिए कहा और बहुत मुस्कराते हुए जवाब दिया करते थे बहुत प्रेम का व्यवहार करते थे।

डॉ नूरी साहिब भी लिखते हैं कि 2004 ई में 14 या 15 साल पहले उन का चेक किया गया था तो पता चला कि उन्हें दिल की बीमारी है और अब इसका इलाज नहीं किया जा सकता है। कहते हैं मुझे बहुत परेशानी हुई क्योंकि केवल दुआ और कुछ मामूली दवा के सिवा और कोई नुस्खा नहीं था लेकिन फिर यह लिखते हैं कि ऐसे लोगों के survival के चांस बहुत कम होते हैं और कुछ साल से अधिक नहीं जी सकते। डाक्टर साहिब लिखते हैं कि लेकिन अल्लाह तआला की कृपा से चीनी ने मुझे आश्चर्य में डाला कि कमज़ोरी के बावजूद, कमज़ोरी के संकेत थे लेकिन आपने कभी भी अपनी बीमारी को अपने कर्तव्यों को पूरा करने और काम करने में असक्ष्म होने की अनुमति नहीं दी। कभी नहीं हुआ कि बीमारी की वजह से काम न करें और या इबादतों में सुस्ती करें बल्कि एक ने मुझे लिखा है कि बहुत बर्फ पड़ी थी हमारा विचार था कि चीनी साहिब के लिए उस दिन आना कठिन होगा। आज फज्र के समय बर्फ बहुत अधिक है और चला भी नहीं जा रहा तो कोई नहीं आया होगा लेकिन कम से कम जाकर मस्जिद तो खोलते हैं लेकिन कहते हैं जब हम बाहर निकले तो बर्फ पर पैरों के निशान थे और जब अंदर गए तो देखा कि चीनी साहिब मस्जिद में न केवल आए थे बल्कि बहुत जल्दी आए और बर्फ में चल कर आए थे और तहज्जुद की नमाज़ अदा कर रहे थे।

अताउल-मुजीब राशिद साहिब ने इन के बारे में जो वर्णन किया है वह अच्छा वर्णन किया है कहते हैं कि उन्होंने बहुत बड़ी शून्यता छोड़ी है। बहुत बड़े बुज़र्ग थे कहते हैं कि मैं सोच रहा था कि उन के गुणों के बारे में क्या लिखूं। बहुत दुआ करने वाले और दुआओं के कूबूल होने वाले बुज़ुर्ग थे। नमाज़ों के बहुत पाबन्द और बीमारी और कमज़ोरी के बावजूद मस्जिद में जाने वाले , बहुत नेक और ख़ुदा का भय रखने वाले और किसी को नुकसान न पहुंचाने वाले थे। प्रत्येक की भलाई चाहने वाले और नेक परामर्श देने वाले थे। बहुत सादा मिज़ाज इंसान थे। बहुत मेहमान नवाज़ और मुहब्बत भरे आग्रह से मेहमान नवाज़ी करने वाले थे। बहुत ऊंची हिम्मत वाले और कमज़ोरी के बावजूद धर्म की सेवा में बहुत अधिक काम करने वाले, अपने कर्तव्यों को बहुत श्रद्धा और वफा तथा मुहब्बत से निभाने वाले थे। काम की एक स्पष्ट धुन थी। अहमदिया ख़िलाफत के सच्चे निस्वार्थ और वफादार सेवा करने वाले थे। हमेशा बहुत अच्छे आचरण और मुस्कुरा कर मिलने वाले थे। और भी कई गुण थे उन के और ये सब वास्तविक तथ्य हैं।

अल्लाह तआला उसमान चीनी साहिब के स्तर ऊंचा करता चला जाए और उन की अपनी पत्नी को भी धैर्य और साहस प्रदान करे और उन का हाफिज़ तथा नासिर हो और इसी तरह बच्चों को भी उनकी दुआओं और नेक कर्मों का उत्तराधिकारी बनाए। उनके नक्शे कदम पर चलने वाले हों। मैं अब नमाज़ के बाद उन का नमाज़ का नमाज़ा भी पढ़ाउंगा। इंशा अल्लाह

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 12 का शेष

वैश्विक बैअत के दृश्य देखने के बाद भी, बहुत प्रभावित हुए और कहा कि मैंने अपने जीवन में इस तरह के दृश्य को कभी नहीं देखा। जिस तरह से लोग अपने ख़ुदा के समक्ष झुके हुए थे और रो रहे थे वह आश्चर्यजनक था।

कंबोडिया के प्रतिनिधिमंडल की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ यह मुलाकात 12 बज कर 15 मिनट तक जारी रही। अंत में, कंबोडिया के प्रतिनिधिमंडल ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर खींचने का सौभाग्य प्राप्त किया।

इटली का प्रतिनिधिमंडल

इसके बाद इटली से आए प्रतिनिधिमंडल ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। इटली के एक नए बैअत करने वाले इतालवी मित्र मैनुअल ओलिवेर्स साहिब भी प्रतिनिधिमंडल में शामिल थे। महोदय ने 15 जून 2017 ई को बैअत की थी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ ने महोदय से सम्बोधित होते हुए फरमाया आप इतालवी भाषा में अनुवाद का काम शुरु करें। पुस्तक पाथ वे टू पीस का जो नया संस्करण आ रहा है, जिसमें डच संसद और जापान के भाषण भी शामिल हैं। इसका अनुवाद भी किया जाना चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ ने सदर जमाअत इटली से पूछा कि यह किताब अगर इटली में प्रकाशित की गई है, तो इसकी क्या कीमत आएगी? इस पर सदर साहिब इटली ने कहा है कि इस पुस्तक का पहला संस्करण जर्मनी से छपा था।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ ने इस नए अहमदी दोस्त से फरमाया कि आप ने बैअत कर ली है अब आप इस्लामी शिक्षाएं सीखें और उन्हें याद करें। सूरतुल फातिहा सीखें और इसे याद करें। सूरत अल-फातिहा की सात आयतें हैं। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि सूरत फातिहा के बिना नमाज़ नहीं होती इस लिए इस को सीखें। हुज़ूर अनवर ने महोदय को सुरत फातिहा पढ़ कर सुनाई।

इटली के प्रतिनिधिमंडल की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ यह मुलाकात 12 बज कर 50 मिनट तक जारी रही। अंत में, प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर खींचने सौभाग्य प्राप्त किया।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

है, न वह किसी का बेटा और न कोई उसका बेटा है, वह दुख उठाने और सलीब पर चढ़ने और मरने से परे है, वह बावजूद दूर होने के निकट है और निकट होने के बावजूद दूर है और बावजूद एक होने के उसके चमत्कारिक स्वरूप अनेक हैं । मनुष्य की ओर से जब एक नए रंग का परिवर्तन प्रकट होता है तो उसके लिए वह एक नया ख़ुदा बन जाता है । वह उससे एक नए चमत्कारिक स्वरूप के साथ व्यवहार करता है और मनुष्य अपने परिवर्तन के अनुसार ख़ुदा में भी परिवर्तन देखता है। पर ऐसा नहीं है कि ख़ुदा में वास्तव में कोई परिवर्तन आ जाता है अपितु वह अनादि, अनन्त, अपरिवर्तनीय और सर्वगुण सम्पन्न ह । परन्तु मानवीय परिवर्तनों के समय जब मनुष्य भलाई की ओर उन्मुख होता है तो ख़ुदा भी एक नए चमत्कारिक रूप में उस पर प्रकट होता है और प्रत्येक उन्नतिशील स्थिति के समय जो मनुष्य से प्रकट होती है, ख़ुदा का शक्तिशाली चमत्कारिक स्वरूप उसी उन्नतिशील रूप में प्रकट होता है । वह अपनी अलौकिक शक्ति का असाधारण प्रदर्शन उसी स्थान पर करता है जहॉं असाधारण परिवर्तन का प्रदर्शन होता है। असाधारण शक्तियों और चमत्कारों की यही जड़ है। यही ख़ुदा है जो हमारे सिलसिले की शर्त है उस पर ईमान लाओ। अपने आराम, अपने प्राण और उसके समस्त सम्बन्धों पर उसको प्राथमिकता दो, अपने व्यवहार से वीरता के साथ उसके मार्ग में सत्य और वफ़ादारी का प्रदर्शन करो। दुनियां अपने भौतिक संसाधनों और निकट सम्बन्धियों पर उसको प्राथमिकता नहीं देती परन्तु तुम उसको प्राथमिकता दो ताकि तुम आकाश पर उसकी जमाअत लिखे जाओ ।

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 19 पृष्ठ 9 से 11)

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

मुलाकात और हुज़ूर अनवर के महत्त्वपूर्ण निर्देश

आज कार्यक्रम के अनुसार जलसा सालाना यू.के में शामिल होने वाले सभी मुबल्लिग़ों, मुरब्बियान, देशों के अमीरों और नेशनल सदरो और केंद्र कादियान और रबवा से आने वाले नाज़िरों, वकीलों और अन्य जमाअत के पदाधिकारियों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात थी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ अपने दफतर में विभिन्न कामों को पूरा करने में लीन रहे। एक बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ मस्जिद बैयतुल फुतूह तशरीफ लाकर ख़ुत्बा जुम्अ: इरशाद फरमाया और शुक्रवार की नमाज़ व अस्र की नमाज़ जमा करके पढ़ाई। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ मस्जिद फज़ल तशरीफ लाए।

मुबल्लिग़ों के साथ मीटिंग का प्रबन्ध गेस्ट हाऊज़ 41 और 53 के पीछे लगाई गई मार्की में किया गया। इस मीटिंग में 67 देशों से 321 मुबल्लिग़ीन और मुरब्बी, देशों के अमीर, राष्ट्रीय अध्यक्ष और केंद्रीय अधिकारियों ने भाग लिया। महाद्वीपों के अनुसार देशों की रिपोर्ट निम्नलिखित है

अफ्रीका महाद्वीप के 19 देशों से आने वाले मुबल्लिग़, अमीरो और देशों के सदर इस में शामिल हुए। इन देशों में घाना, सिएरा लियोन, बेनिन, बोर्कीनाफ़ासो, नाइजीरिया, नाइजर, जाम्बिया, गिनी कनाकरी, आइवरी कोस्ट, सेनेगल, तंज़ानिया, केन्या, कांगो कनशासा, टोगो, यूगांडा, जिम्बाब्वे, कैमरून, मॉरीशस और बुरुंडी शामिल थे।

यूरोप महाद्वीप के 18 देशों के मुबल्लिग़ीन और प्रतिनिधि इसमें शामिल हो गए। इन देशों में जर्मनी, यूके, फ्रांस, आयरलैंड, नीदरलैंड, नॉर्वे, स्वीडन, स्विस, स्पेन, रूस, बीलजयम, डेनमार्क, फिनलैंड, हंगरी, आइसलैंड, मकदूनिया, क्रोएशिया और ग्रीस शामिल हैं।

महाद्वीप नार्थ और साऊथ अमेरिका के 15 देशों का प्रतिनिधित्व हुआ जिनमें अमेरिका, कनाडा, ग्वाटेमाला, गुयाना, हैती, फ्रेंच गयाना, बेलीज़, बोलीविया, इक्वाडोर, जमैका, पराग्वे, उरुग्वे, हंडोरास, अर्जेंटीना और मैक्सिको शामिल थे।

एशिया महाद्वीप से भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, इंडोनेशिया, मलेशिया, कंबोडिया, फिलीपींस, सिंगापुर, जापान , श्रीलंका, दुबई और अबूज़हबी सहित कुल 12 देशों का प्रतिनिधित्व हुआ गया।

ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, मार्शल द्वीपसमूह और माइक्रोनेशिया से आने वाले, सदर अमीर और मुबल्लिग़ शामिल हुए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ साढ़े पांच बजे मार्की में तशरीफ़ लाए और तिलावत कुरआन से कार्यक्रम शुरू हुआ जो आदरणीय अब्दुल्ला डुबा साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला अमेरिका ने की।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने विभिन्न देशों से आए हुए अमीरों और मुबल्लिग़ों से पिछले साल मीटिंग में दिए जाने वाले निर्देशों और मुबल्लिग़ों के अनुपालन पर विस्तृत रिपोर्ट मांगी और साथ ही नई हिदायतें प्रदान कीं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने विशेष रूप से अफ्रीकी देशों में नए अहमिदयों की शिक्षा और प्रशिक्षण और उन्हें जमाअत की प्रणाली का सक्रिय रूप से भाग लेने और जमाअत की वित्तीय प्रणाली में जोड़ने के संदर्भ में बड़े विस्तार के साथ देशों के अमीरों और मुबल्लिग़ों से बारी बारी समीक्षा की और हिदायतों से नवाज़ा।

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने अमीर साहिब घाना से फरमाया: मैंने कहा था कि चाहे कोई Cedi या 50 Pesewa भी देता है तो उन्हें कुरबानी की आदत डालनी चाहिए। मुझे पता है कि ग़रीब लोग हैं लेकिन मैंने देखा है कि ग़रीब लोग भी बलिदान करते हैं जब भी एक कार्यक्रम होता है और इस में जब मुअल्लिम तहरीक करते हैं तो चंदे देते हैं। आप उन को आदत डालें कि नियमित या कम से कम नियमित रूप से नहीं तो महीने में एक बार या साल में एक बार चंदा वक्फ जदीद और तहरीक जदीद दिया करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने बेनिन के अमीर से कहा सभी को चंदा की व्यवस्था में शामिल किया जाना चाहिए, भले ही वे थोड़ा क्यों न दें। उन्हें एहसास कराएं कि कोई टैक्स नहीं है। बल्कि कुरबानी की आदत है। मेरा पैसे लक्ष्य नहीं है मेरा तो संख्या से लक्ष्य है। चाहे कोई एक फ्रैंक ही दे, लेकिन उसे पता हो कि माली कुरबानी करनी है। नए बैअत करने वालों की तरबियत का भी साथ साथ प्रबन्ध करते रहें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: जहां भी बैअतें हुई हैं, वहां बैअतों के बाद उन से सम्पर्क भी रखना चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने अमीर साहिब बोरकीनाफासो से फरमाया: बैअत करने वालों को माली निज़ाम का हिस्सा बनाएं। तो अपने आप ही जमाअत की प्रणाली का हिस्सा बन जाऐंगे। यही कारण है कि मैंने कहा था कि चाहे एक फ्रैंक लें या थोड़ा सा लें। जब उन्हें वित्तीय प्रणाली का हिस्सा बनाने की कोशिश करेंगे तो संपर्क स्थायी बने रहेंगे और उन्हें वित्तीय बलिदान की आदत पड़ेगी कि वित्तीय बलिदान भी उनके धर्म का हिस्सा है। हालांकि लोगों की भागीदारी बढ़ाई जानी चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने अमीर साहिब यूगेण्डा से फरमाया: आप तहरीक जदीद और वक्फ जदीद के लिए तो सारे ही योग्य हैं, चाहे आप शिलिंग लें। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, लेकिन उन्हें तहरीक जदीद, वक्फ जदीद में शामिल करने की कोशिश करें। उन्हें वक्फ जदीद और तहरीक जदीद में चंदा देने की आदत डालें। बेशक साल में एक बार ही दें यही काफी है परन्तु इस से उन का जमाअत के साथ सम्पर्क रहेगा। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने अमीर साहिब सिएरा लियोन को फरमाया, आप नए अहमदियों को चंदा में शामिल करने के लिए क्या कोशिश कर रहे हैं? अपनी कोशिशें बताएं ताकि दूसरे भी इस से लाभ उठा सकें।

इस पर, अमीर साहिब सिएरा लियोन ने कहा: हमारे पास 12 क्षेत्र हैं इस बार हमने प्रत्येक क्षेत्र में तीन तीन सेमिनार कराए हैं। लगभग 400 के करीब नए अहमदी इमामों को ट्रेंड किया है और हर तीन महीनों में एक कक्षा का आयोजन करते हैं इस समय क्षेत्र में 12 मुबल्लिग़ और 59 सर्किट मिशनरी हैं और क़रीब 250 स्थानीय मुअल्लिम हैं। हमारे पास 1200 से अधिक जमाअतें हैं ये सभी मिलकर काम कर रही हैं और जमाअतों के दौरे करते हैं जिस के कारण चंदा में शमिल होने वाले नए अहमदियों की संख्या में वृद्धि हो रही है।

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने मुलाकात के दौरान देशों के मिशन हाउसज़ जहां मुख्य मुबल्लिग़ निर्धारित हैं वहाँ पुस्तकालयों की स्थापना और उन्हें स्थायी UPDATE रखने संदर्भ देशों वायज़ बड़ी विस्तार समीक्षा और निर्देश देते हुए कहा कि जिन सेंटरों में लाइब्रेरी की स्थापना हो चुकी है। कई नई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, वे पुस्तकालय के लिए भी मंगवा लें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: कादियान या यू.के से जो भी नई किताबें छप रही हैं उस के अनुसार अपडेट करें। जो अंग्रज़ी और अरबी समझने वाले हैं उन के लिए उन भाषाओं में प्रकाशित होने वाली नई किताबें ले कर जाएं।

इसी प्रकार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया कि किसी को लायब्रेरी की स्थापना या किताबें प्राप्त करने में कोई कठिनाई हो रही हो तो बताएं। जहां जहां केंद्रीय मुबल्लिग़ हैं, वहां पुस्तकालय होना चाहिए। यदि कोई लायब्रेरी होगी तो लाभ उठा सकते हैं। उन्हें पढ़ने की आदत भी होगी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबें और जितनी भी अंग्रज़ी किताबें मौजूद हैं उन को वहां रखें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: जो नई किताबें छप रही हैं इस के अनुसार अपनी लिस्ट को अपडेट करते रहा करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया जामिया में प्रत्येक भाग की चार चार जिल्दें होनी चाहिए। प्रत्येक जिल्द की चार चार किताबें होनी चाहिए। इस के अनुसार समीक्षा करें। फज़ले उमर फाऊंडेशन और नज़ारत इशाअत से पता करें। इसी प्रकार अंग्रज़ी में जो ब्राहीन अहमिदया का अनुवाद हुआ है वह भी मंगवाएं। इसी तरह से तफसीर कबीर की अरबी जिल्दें प्रकाशित हो चुकी हैं वे भी मंगवाएं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया पिछले साल भी मैंने सारे मुबल्लिग़ों को कहा था कि लायब्रेरियां पूर्ण करें। लिस्टें मंगवाएं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने एडीशनल वकीलुल

इशाअत बराए तरसील को सम्बोधित करते हुए फरमाया आप का काम है कि देशों से सम्पर्क करें और प्रत्येक मिशन को लिस्ट भेजें। स्थानीय भाषाओं के लिट्रेचर के अतिरिक्त बाकी सब भाषाओं की लिस्ट होना चाहिए। यहां अनावरुल उलूम तो प्रकाशित नहीं हो रहीं। ख़ुत्बाते महमूद भी प्रकाशित नहीं हो रहीं। वह इन से लिस्ट ले कर भिजवाएं। कादियान से प्रतिनिधि आए हुए हैं उन से मीटिंग करें। उन से मालूमात लेकर लिस्ट सारे मिश्नों को भेजें। कि चेक करें कि कौन सी किताबें आप की लायब्रेरी में हैं। कादियान का यह हरिगज़ काम नहीं है कि बाहर के मिशनों से सम्पर्क करे। यह सम्पर्क यहां के एडीशनल वकालत इशाअत ने करना है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया नमाज़ जमाअत के साथ अदा करने के हवाले से भी विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों की समीक्षा की और हिदायतें दीं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने एक असूली हिदायत देते हुए फरमाया कि जितने लोग आप को चंदा देते हैं, उन से अधिक नमाज़ पढ़ने वाले होने चाहिए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ सेंटर के हवाले से हिदायत देते हुए फरमाया जिन इलाकों में अहमदियों के घर करीब करीब हैं वहां किसी घर में इकट्ठे हो कर नमाज़ पढ़ लिया करें। इसी प्रकार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया हर देश में, हर मिशन में मुबल्लिग़ कोशिश करें कि लोग मस्जिदों में आएं वरना करीब के किसी घर में इकट्ठा हो कर वहां नमाज़ पढ़ लिया करें। यह बहुत ज़रूरी है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने विभिन्न देशों में बांटे जाने वाले लीफलेटस की भी विस्तार से समीक्षा की। अल्लाह तआला के फज़ल से सारी दुनिया में एक बड़ी संख्या में लीफ लेटस बांटा गया जिस से जमाअत के परिचय लाखों लोगों तक पहुंचा।

स्वीडन के मुबल्लिग़ से रिपोर्ट देते हुए कहा कि इस साल लीफ लेटस छपवाने में बहुत देरी हुई इसलिए अधिक संख्या में लीफ लेटस बांटे नहीं जा सके। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया कि बार बार याद दिलाते रहा करें।

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने मेक्सिको और ग्वाटेमाला में लीफ लेटस बांटे जाने के बारे में वहाँ के मुबल्लिग़ों से पूछा कि लीफ लेट के वितरण से क्या जमाअत का कोई सकारात्मक परिचय भी हुआ है या नहीं? क्या लोग निजी रुचि व्यक्त करते हैं? इस पर मुबल्लिग़ ने कहा कि लीफ लेट के वितरण के कारण बहुत रुचि ले रहे हैं और हमारे नए संपर्क भी बने हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने वक्फे नौ के बारे में भी विभिन्न देशों की समीक्षा की और हिदायत देते हुए फरमाया कि मैंने कहा था कि वाक्फीने नौ प्रत्येक देश से जामिया अहमदिया में जाएं अफ्रीका वाले अपने जामिया में जा सकते हैं कैनेडा वाले भी जा सकते हैं। प्रत्येक देश में जो वाकफीन नौ है उन को टारगेट दें कि एक प्रतिशत वाकफीन नौ को जामिया अहमदिया में जाना चाहिए। मुरब्बियों की बहुत अधिक ज़रूरत है जो पूरी नहीं हो रही। छोटे देशों में यह टारगेट कम से कम पांच प्रतिशत होना चाहिए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने इन्चार्ज विभाग वक्फे नौ केन्द्रीय(लंदन) को हिदायत देते हुए फरमाया मुझ से प्रत्येक देश का अलग अलग टारगेट निर्धारित करवा लें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने किताबों के प्रकाशन के मामला में हिदायत देते हुए फरमाया Five Volume Commentary जल्दी प्रकाशित होनी चाहिए। इसी प्रकार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने किताब World Crisis and Pathway to Peace नए संस्करण के विभिन्न भाषाओं में अनुवाद के संदर्भ निर्देशित करते हुए कहा कि इटालियन और इंडोनेशियाई भी World Crisis and Pathway to Peace का अनुवाद जल्द पूरा करें। जिन देशों में अंग्रेज़ी समझी जाता है, वहां मूल भाषाओं में विश्व संकट और शान्ति का मार्ग का अनुवाद करने की कोई आवश्यकता नहीं है। लोग केवल अंग्रेज़ी में ही पढ़ लेते हैं फैंटी में करने की आवश्यकता नहीं है। इसी तरह, फ़िनलैंड में 95% लोग अंग्रेज़ी समझते हैं फिनिश में भी करने की कोई ज़रूरत नहीं है। टवी भाषा में भी अनुवाद की आवश्यकता नहीं है बाकी सब को याद दिलाएं। यहां जो प्रतिनिधि आए हुए हैं शीघ्र अपने अमीरों को तुरंत दो सप्ताह के भीतर अपनी रिपोर्ट भेजने के लिए कहें। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने अतिरिक्त वकीलुल इशाअत साहिब को हिदायत फ़रमाई: जो किताबें इंडियाना पाकिस्तान में प्रिंट नहीं हो सकतीं उनकी सूची मंगावाएं और उन्हें यहाँ से प्रिंट करवाएं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने जमाअत के साहित्य को बेचने के लिए निर्देशित किया जमाअतें जो साहित्य लेती हैं वे बेचते भी हैं या स्टोर कर देती हैं। पुस्तकालय के अलावा भी आपके पास रिपोर्ट भी होनी चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ तआला ने फरमाया: लोगों को किताबें ख़रीदने की आदत डालें। आजकल लोग फ़ोनों पर अधिक पढ़ते हैं इसलिए पुस्तकें ख़रीदकर पढ़ते ही नहीं।

* तब्लीग़ के हवाले से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने हिदायत देते हुए फरमाया हर देश को अपनी स्थिति को देखते हुए अलग-अलग तरीकों से प्रचार करना चाहिए।

मुबल्लिग़ों और जमाअत के उहदेदारों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ के साथ यह मीटिंग 8 बज कर 15 मिन्ट पर ख़त्म हुई। अन्त में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई।

दुआ के बाद मीटिंग में शामिल सारे मुबल्लिग़ों अमीरों और सदर साहिबों ने अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य प्राप्त किया। तस्वीर के लिए सारे मेंम्बरों को निम्नलिखित भागों में बांट दिया गया था। भारत के प्रतिनिधि, प्रतिनिधि तहरीक जदीद रबवा और ख़ुद्दामुल अहमदिया (पाकिस्तान), प्रतिनिधि सदर अंजुमन अहमदिया रबवा और वक्फ जदीद रबवा, मुबल्लिग़ अफ्रीकी फ्रेंच देश(मॉरीशस, कांगो किंशासा, बवर्कीनाफ़ासो, बुरुंडी, गिनी कनाकरी, बेनिन, नाइजर, आइवरी कोस्ट, टोगो, सेनेगल और कैमरून, मुबल्लिग़ अन्य अफ्रीकी देश (घाना, तंज़ानिया, यूगांडा, सिएरा लियोन, नाइजीरिया, जाम्बिया, जिम्बाब्वे), मुबल्लिग़ जर्मनी, मुबल्लिग़ ब्रिटेन, जर्मनी के अलावा अन्य यूरोपीय देशों के मुबल्लिग़, मुबल्लिग़ सिलसिला अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, मेक्सिको, ग्वाटेमाला, मार्शल आइलैंड, न्यूजीलैंड, माइक्रोनेशिया, मुबल्लिग़ीन सिलसिला कनाडा, ब्लेज़, इक्वाडोर, मुबल्लिग़ सिलसिला हैती, ग्वाटेमाला, गुयाना, फ्रेंच गयाना, पाकिस्तान और भारत के अलावा एशियाई देश (जापान, कंबोडिया, इंडोनेशिया, मलेशिया, बांग्लादेश, सिंगापुर) के मुबल्लिग़, केंद्र डेस्क कार्यालयों (वकालत तबशीर, वकालत मॉल, कार्यालय निजी सचिव, वकील तामील तंफीज़) में सेवा करने के वाले मुबल्लिग़, मुबल्लिग़ों मुख्य डेस्कस (रूसी, अरबी, बंगला, चीनी, तुर्की), अभिलेखागार विभाग, एम.टी.ए, रयूयू आफ रिलेजनज़, वक्फे नौ, रकीम प्रेस, प्रेस और मीडिया, ख़ुद्दामुल अहमदिया में सेवा करने वाले मुबल्लिग़, शिक्षक जामिया अहमदिया यू.के, शाहेदीन जामिया अहमदिया कनाडा वर्ष 2017 ई, शाहेदीन जामिया अहमदिया यू.के वर्ष 2017, शाहेदीन जामिया अहमदिया जर्मनी वर्ष 2017, इसके अलावा जामिया अहमदिया रब्वा के 1981 ई वर्ष के स्नातक कक्षा मुबल्लिग़ीन ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की सेवा में तस्वीर को ख़िंचवाने का अनुरोध किया था कि इस वर्ष के छात्र इस अवसर पर विभिन्न स्थानों से इकट्ठा हो रहे हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने दया करते हुए इस की आज्ञा दी थी।

तस्वीर के प्रोग्राम के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ अपने कार्यालय पधारे। 9 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद बैतुल फुतूह में पधार कर नमाज़ मग़रिब व इशा जमा करके पढ़ाई।

समारोह डिनर

नमाज़ों के अदा करने के बाद मुलाकात में शामिल होने वाले सभी केन्द्रीय प्रतिनिधि, अमीर, देशों के नेशनल सदर, मुबल्लिग़ किराम और अन्य जमाअत के पदाधिकारियों के लिए रात्रिभोज का प्रबंधन किया गया था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ करूणा करते हुए इस प्रोग्राम में शामिल हुए। और सब शामिल होने वालों ने अपने प्यारे आक़ा के साथ खाना खाया। रात के खाने का यह प्रोग्राम रात दस बजे ख़त्म हुआ। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपने निवास स्थान पर पधारे।

(5 अगस्त 2017 शनिवार)

आज कार्यक्रम के अनुसार बोलीविया, पराग्वे , कांगो कनशासा, कंबोडिया, इटली, जाम्बिया, मिस्त्र, यूगांडा, जिम्बाब्वे और घाना से आने वाले मेहमानों और प्रतिनिधियों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात का कार्यक्रम था। मुलाकातों का यह प्रोग्राम 5 बज कर 11:00 बजे शुरू हुआ।

बोलिविया का प्रतिनिधिमंडल

सब से पहले बोलीविया से आने वाले वफद ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ से मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया।

बोलीविया से इस साल वहाँ के एक प्रसिद्ध अखबार El Deber के प्रमुख संपादक Carlos Jamie Orias साहिब आए थे और उनके साथ वहाँ के मुबल्लिग़ अताउल ग़ालिब साहिब थे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने महोदय से जलसा के बारे में पूछा जिस पर महोदय ने कहा कि यह जलसा की व्यवस्था से बहुत प्रभावित हुआ है। यह मेरे जीवन का पहला अनुभव था। मैंने इतनी बड़ी संख्या हो और फिर किसी तरह का कोई दंगा फसाद, कोई गलत धारणा न हो। इस प्रकार मैंने कभी नहीं देखा।

महोदय ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ से आप के परिवार के बारे में पूछा जिस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया मेरे परिवार में मेरी बेगम और दो बच्चे हैं। दोनों बच्चों की शादी हो चुकी हैं। मेरे नाती पोते भी हैं भोजन और चाय पर मिलते हैं। रात को भी मिल लेते हैं। मैं कुछ समय परिवार के साथ बिताता हूं।

*अमन की स्थापना के लिए प्रयासों को लेकर पत्रकार के एक सवाल पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: यह एक लंबा और लगातार किया जाता वाला Process है। मैं दुनिया के विभिन्न प्लेटफार्मों पर अपने सम्बोधनों में लोगों को ध्यान केंद्रित करता रहता हूं इसी तरह जब में नेतृत्व और ज़िम्मेदार अधिकारियों से मिलता हूं, तो उन्हें भी ध्यान दिलाता हूं। मैंने विभिन्न देशों के प्रमुखों को भी पत्र लिखा है जमाअत हर स्तर पर अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर रही है।

एक सवाल के जवाब में, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि इस्लाम अंतिम और स्थायी धर्म है। सभी धर्म इस्लाम के ख़िलाफ इस लिए भी हैं कि क्योंकि इस्लाम कहता है कि यह अंतिम और आदर्श धर्म है और सभी अन्य धर्म अंतत: इस्लाम में प्रवेश करेंगे और यही एक धर्म होगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया, इस्लाम के विरुद्ध कोई भी देश अब हथियार नहीं उठा रहा। जो लड़ाइयां हो रही हैं वे राजनीतिक हैं आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भविष्यवाणी फरमाई थी कि अंतिम समय में एक सुधारक, मुस्लेह आएगा और उसके ज़माने में तलवार के जिहाद का ख़ात्मा होगा। मज़हबी युद्ध नहीं होंगे। हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सालम वही सुधारक और रिफारमर हैं जो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार आए। आप अलैहिस्सालम ने एलान किया कि इस ज़माना में कोई भी इस्लाम के विरुद्ध तलवार नहीं उठा रहा। तो अब तलवार का जिहाद नहीं। यह कलम के दौर का जिहाद है अब इस्लाम के विरुद्ध लिट्रेचर के प्रकाशन के द्वारा हमला किया जा रहा है। तो इस का उत्तर भी इन्हीं हथियारों अर्थात लिट्रेचर के माध्यम से दिया जाए। अत: इस ज़माना में जमाअत अहमदिया लिट्रेचर के प्रकाशन इलेक्ट्रानिक तथा सोशल मीडिया के माध्यम से इस्लाम पर हो रहे आरोपों की जवाब दे रही है।

* महिलाओं के बारे में पूछने पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया, हमारी महिलाएं पुरुषों की तुलना में अधिक पढ़ी हैं। महिलाओं की संख्या पुरुषों की तुलना में अधिक पढ़ी हुई है।

* पत्रकार Carlos Jamie साहिब ने अपने भाव प्रकट करते हुए कहा: जिस बात ने मुझे जमाअत अहमदिया के बारे में सबसे अधिक प्रभावित किया वह जमाअत अहमदिया की शांति की स्थापना के लिए जोश और स्थापित करने के लिए प्रयास हैं। यह एक ऐसा संदेश है जो आज बहुत महत्त्वपूर्ण और महत्त्व वाला है। इसी प्रकार जमाअत अहमदिया के विभिन्न समूहों और विभिन्न सभ्यताओं के लोगों को भी इस्लाम के मूल आधार के अनुसार इकट्ठा करने की इच्छा भी बहुत मुबारक है।

इसी प्रकार, मेरे लिए यह विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण थी कि स्वयंसेवकों के साथ इतनी विस्तृत प्रबंधन की व्यवस्था की जाती है इससे पता चलता है कि चाहे कितनी मुश्किल हो, विश्वास, ईमानदारी और नि:स्वार्थ रूप से काम से क्या किया जा सकता है।

इमाम जमाअत अहमदी ने पुरुषों और महिलाओं के अधिकारों के बारे में जो तकरीर की इस से मेरे कई संदेह दूर हो गए इस ख़िताब से पुरुषों और महिलाओं के बारे में इस्लामिक शिक्षा की हिक्मत मुझ पर स्पष्ट हो गई।

शैक्षिक क्षेत्र में भी अहमदी महिलाओं की उपलब्धियां ख़ुश करने वाली हैं। यह साबित करता है कि पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए अनिवार्य है कि वे दुनिया की शांति के लिए प्रयास करने के लिए कोशिश करें पहले परिवार के स्तर पर, फिर सामुदायिक स्तर पर और फिर देश के स्तर पर और सारी दुनिया के स्तर पर।

इमाम जमाअत अहमदिया का यह समापन ख़िताब अहमदियों के लिए जितना आवश्यक था, शेष दुनिया और सारी क़ौमों के लिए आवश्यक था।

इमाम जमाअत अहमदिया ने जिहाद के वास्तविक अर्थ पर प्रकाश डाला और कहा कि जिहाद का असली अर्थ प्रयास और सुधार के लिए कड़ी मेहनत करना है और यही चीज़ दुनिया को विनाश से बचाने और एक असली भाईचारा की स्थापना की बुनियादी ईंट है।

महोदय ने कहा: पश्चिम के निकट, इस्लाम औरतों को पीछे रखता है और उनकी कोई स्थिति नहीं है। लेकिन मैंने यहाँ देखा कि इमाम जमाअत अहमदिया तो उच्च उपलब्धियां हासिल करने वाली महिलाओं को पुरस्कार दे रहे हैं और प्रत्येक महिला को व्यक्तिगत रूप से पुकारा जा रहा तो मेरे दिल में तीव्र इच्छा पैदा हुई कि मैं वापस जाकर अपने अख़बार में इस संदर्भ में ज़रूर लिखूँगा। क्या दुनिया में कभी किसी मार्ग दर्शक ने औरतों को संबोधित करते हुए संबोधन किया है? कभी नहीं।

बोलिविया के प्रतिनिधिमंडल की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात 11 बजे तक जारी रही। मुलाकात के अंत में, प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

पराग्वे का प्रतिनिधिमंडल

इस के बाद पराग्वे से आने वाले वफद ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। पराग्वे से आने वाला प्रतिनिधिमंडल पांच सदस्यों में शामिल था जिनमें पराग्वे के दो बड़े अख़बारों के पत्रकार Aldo Antonio Benitz साहिब और Juan Perez Acosta और एक नए अहमदी Benjanmin Lopez शामिल थे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ के पूछने पर प्रतिनिधि मण्डल के सदस्यों ने बताया कि जलसा की व्यवस्था बहुत अच्छी थी। हमने देखा है कि लोग अपने विश्वास के बारे में कैसे मज़बूत हैं। तीनों दिन एक आध्यात्मिक वातावरण था। हमने कई भावनात्मक दृश्य देखे हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: एक अस्थायी गांव जलसा की व्यवस्था के लिए बनाया गया था। अब आप वहां जा कर देखें तो अस्थायी स्थान था और अब वह एक खेत है। हमारे स्वंयसेवकों ने सब कुछ साफ कर दिया है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने पैराग्वे के मुबल्लिग़ को निर्देश दिया कि वह दक्षिण अमेरिका के उन स्पैनिश देशों में काम करने के लिए और दीर्घकालिक योजना बनाए और एक छोटी अवधि की योजना तैयार करें।

* स्पेन के संदर्भ में भी बात हुई कि यहां अब भी लोगों, स्थानों के नाम मुस्लिम नामों की तरह हैं।

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: यहाँ पहले ईसाई थी, फिर इस्लाम आया, उसके बाद फिर ईसाई आ गए लेकिन उनके मार्ग ऐसे हैं कि मुसलमानों की तरह नाम क्षेत्रों में चल रहे हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने कहा: स्पेन में इस्लाम सात सौ साल तक रहा। फिर ईसाइयत दोबार आ गई। अब हम दोबारा लोगों के दिलों को फिर से जीतेंगे और उन के दिलों में इस्लाम को प्रवेश करेंगे। इस्लाम किसी भी युद्ध के कारण नहीं फैलेगा, बल्कि इस्लाम अपनी मूल शिक्षा प्रेम के माध्यम से फैलेगा।

* पत्रकार ने सवाल किया कि क्या आप इन दक्षिण अमेरिकी देशों में अपना काम बढ़ाएंगे?

हम निश्चित रूप से इस काम में वृद्धि करेंगे और इसे फैलाते चले जाएंगे। अभी तो इन देशों में काम शुरू हुआ है। हमें इसे आगे बढ़ाना होगा जैसे जैसे हमें और अधिक मुबल्लिग़ प्राप्त होंगे हैं, हम यहां और अधिक मुबल्लिग़ भेजेंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: हम ने इस्लाम की शांति और सुरक्षा की शिक्षा प्रस्तुत करनी है। अच्छी चीज़ें प्रस्तुत करें तो जिस को पसन्द आती है तो वह ले लेता है। हम ने सिर्फ इसे पेश करना है कोई

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 3 Thursday 31 May 2018 Issue No. 22

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

भी ज़बरदस्ती नहीं करनी है। इस पर पत्रकार ने कहा कि आपकी जमाअत जो शांति का संदेश फैला रही है वह बहुत अच्छा है।

पत्रकार ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: यह एक बहुत ही अद्भुत अनुभव था। मुझे अहमदियों के धर्म के साथ लगाव और ईमान की मज़बूती ने बहुत प्रभावित किया है। और सब से बढ़ कर मुझे इस बात का ज्ञान हुआ कि इस्लाम शांति सिखाता है। सच्चा इस्लाम पड़ोसियों को प्यार और कट्टरता से घृणा सिखाता है।

इसी तरह, प्रतिनिधिमंडल में शामिल नए अहमदी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: ख़लीफ़ुतल मसीह का संदेश केवल मुस्लिमों के लिए नहीं बल्कि सारी दुनिया के लिए है। मैं दुनिया भर के लोगों को देखने से बहुत ही आश्चर्यचकित हूं। विभिन्न जनजातियों और स्थानों के लोग, जिनके जीवन बहुत अलग थे, लेकिन प्यार, विश्वास और शांति के नाम पर जमा थे। और सभी अल्लाह तआला के नाम पर इकट्ठे किए गए थे। अल्लाह तआला करे कि सभी लोग जान लें कि यह प्यार और मुहब्बत करने वाली जमाअत है।

पैराग्वे के प्रतिनिधिमंडल की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ यह मुलाकात 11:00 बज कर 45 मिन्ट तक जारी रही। अंत में, प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

कांगो-कंशसा का प्रतिनिधिमंडल

इस के बाद में कांगो-किन्शासा से आने वाले वफद ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ से मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। कांगो से इस साल तीन व्यक्तियों पर आधारित प्रतिनिधिमंडल आया था जिसमें Kwango प्रदेश के प्रांतीय मंत्री परिवहन एवं लघु उद्योग Soulyman Diana Kule साहिब और Jean Piere Ndumba साहिब शामिल थे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ के पूछे जाने पर दोनों मेहमानों ने कहा कि हम जलसा सालाना के निमंत्रण के लिए शुक्रिया अदा करते हैं। जलसा की यादें बहुत गहरी हैं। हम उन्हें नहीं भूल पाएंगे। जलसा का प्रबंधन बहुत अच्छा था। वहां 30 हज़ार से ज्यादा लोग थे, सभी एक-दूसरे को बहुत प्यार से मिल रहे थे। जिस चीज़ ने हमें सबसे अधिक प्रभावित किया था वह छोटे बच्चे थे जो बहुत प्रेम और इच्छा के साथ सेवा कर रहे थे। यह सब देखकर, हमने महसूस किया कि ख़ुदा तआला यहां मौजूद है।

महोदय मिनिस्टर ने कहा जैसा हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने मुसलमान देशों को संबोधित किया था, मुझे डर था कि यहां इन जगहों पर कोई हंगामा न हो जाए।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: यदि सत्य कहने है तो इस के लिए साहस करना पड़ता है

महोदय ने कहा, हमारे देश के लिए दुआ करें कि वहां शांति स्थापित हो जाए। हमारे सरकारी अधिकारी भ्रष्टाचार के लिए जिम्मेदार हैं और लोग उनसे निराश हैं।

महोदय ने अनुरोध किया कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ उन्हें कोई सलाह दें। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया, "सय्यदुल कौमे ख़ादेमुहुम" न्याय की आवश्यकताओं को पूरा करते हुए जनता की सेवा करें। उन की आवश्यकताओं को पूरा करें। आपको अपने से अधिक अपने लोगों की चिंता होनी चाहिए।

* विदेश मंत्री एमबीकेत साहिब ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: जलसा का प्रबंधन हर मामले में बहुत अच्छा था। एयर पोर्ट से जलसा गाह तक मेहमानों का उत्तम स्वागत, भोजन, परिवहन और अन्य आतिथ्य उत्कृष्ट थे। जलसा के बाद भी मेहमानों के वापस जाने तक जमाअत की तरफ से मेहमानों को पूरा ध्यान और सम्मान मिलता रहा। जलसा गाह में काम करते समय, बच्चों के चेहरे पर ख़ुशी और प्रसन्नता की भावनाओं को देख कर मुझे यह अनुभव करने में देर नहीं लगी कि इस स्थान पर ख़ुदा तआला की उपस्थिति प्रत्येक स्थान पर थी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ और प्रत्येक तक़रीर करने वाले की तरफ से मुहब्बत और अमन का जो सन्देश दिया गया है इस का सकारात्मक प्रभाव जलसा में शामिल होने वाले हर व्यक्ति पर था। मुझे एहसास हुआ कि प्रत्येक तक़रीर करने वाला अमन और प्रेम की बात कर रहा था जिस की आज दुनिया को बहुत अधिक ज़रूरत है मैं समझ गया हूं कि वापस जाकर मुझे अपने प्रांत और मेरे देश में एक भूमिका निभानी है। अल्लाह तआला मुझे इस की तौफीक प्रदान करे। मैंने तय किया है कि भविष्य में इन जलसों में शामिल हुआ करूंगा।

कांगो-कन्शासा के वफद की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ यह मुलाकात 12 बजकर 7 मिन्ट तक जारी रही। अंत में प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर खींचने का सौभाग्य प्राप्त किया।

कंबोडिया का प्रतिनिधिमंडल

इस के बाद कंबोडिया से आने वाले वफद ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ से मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। कंबोडिया से तीन लोगों पर आधारित प्रतिनिधिमंडल आया था जिस में वहां के एक राष्ट्रीय टेलीविजन चैनल के निहिम चेनी साहिब भी शामिल हुए थे।

महोदय ने कहा कि जलसा की व्यवस्था ने बहुत प्रभावित किया है। 30,000 से अधिक लोग थे सुबह और शाम लोगों को समय पर भोजन दिया जाता रहा। इतनी बड़ी संख्या में लोगों ने एक ही समय में खाया और किसी तरह का झगड़ा नहीं देखा। सुरक्षा का प्रबंधन भी बहुत अच्छा था। पुलिस की आवश्यकता नहीं थी।

महोदय ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: एक उल्लेखनीय बात यह थी कि इस जलसा में विभिन्न देशों और रंग के लोग विभिन्न देशों से इकट्ठे हुए, लेकिन सभी एक-दूसरे के भाई-बहन लग रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे बहुत क़रीबी रिश्तेदार थे और हर कोई एक दूसरे के साथ प्यार और प्रेम व्यक्त कर रहा था। ये बातें मैंने दूसरे स्थान पर कहीं नहीं देखीं।

शेष पृष्ठ 8 पर

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ
(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/ मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**
Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186
Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab
For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad